ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 145 जोधपुरः हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जून 2020 30/-प्रति

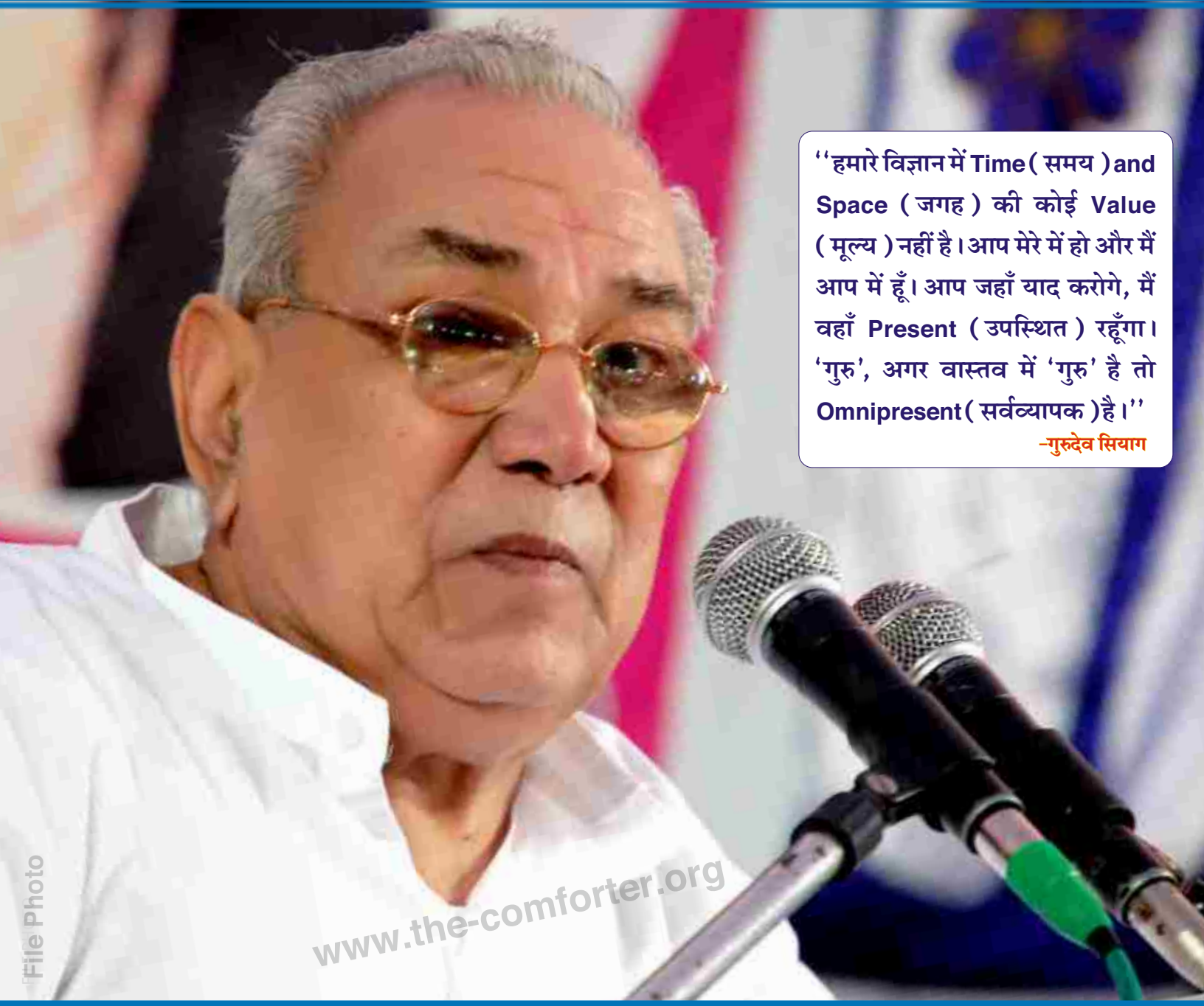

"हमारे विज्ञान में Time (समय) and Space (जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। 'गुरु', अगर वास्तव में 'गुरु' है तो Omnipresent (सर्वव्यापक) है।"

-गुरुदेव सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

आश्रम में विराजित सद्गुरुदेव सियाग

यादों के पल

अप्रेल, 2012

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 145 जोधपुर: हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जून 2020

वार्षिक: 300/- द्विवार्षिक: 600/- मूल्य 30/-

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

विश्व गुरु भारत 4
साधना के पथ पर (सम्पादकीय) 5
प्रभु का दिन चोर की नाई (तरह) आवेगा। 6
आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है ? 7-9
आध्यात्मिक उत्थान के लिए गुरुदेव से करूण प्रार्थना 10
साधना विषयक बातें 11-12
मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि हैं 12
सहायक कब आवेगा ? 13-15
धनबल पर प्रभु का कहर 16
ईश्वर मिलने का तरीका है-शिशु सुलभ 17-18
यादों के पल 19
हरि नाम के जप के बिना योग सिद्धि संभव नहीं 20
'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है....21
समत्वबोध (समाधि) की स्थिति 22
साधकों की अनुभूतियाँ 23-34
सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा....35
भौतिक विज्ञान का अगला प्रयास 36
बाइबल 37
ध्यान की विधि 38

www.the-comforter.org

''विश्व गुरु भारत''

''मनुष्य जाति में जब तक ये तीनों कोश चेतन नहीं होंगे (सत्-चित्-आनंद -सच्चिदानंद), शांति नहीं हो सकती।''

इसका दान तो हमेशा से भारत ही करता आया है और आगे भी करेगा। ये समय ऐसा आ रहा है कि भारत वापस विश्व गुरु बनेगा। अपने Golden Age (स्वर्णमय युग)में जाएगा।

आज का मानव युग परिवर्तन के संधिकाल में जी रहा है-महर्षि अरविन्द ने कहा है कि "Iron Age Is Ended" अर्थात् कलियुग खत्म हो चुका है, मगर बोलवाला अभी भी कलियुग का ही है, लेकिन ऐसा विस्फोट होगा कि दुनिया चकाचौंध रह जाएगी कि ये क्या हो गया ?

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

साधना के पथ पर

आध्यात्मिक पथ पर चलनेवाले सभी व्यक्तियों को पथ की कठिनाइयों और परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है; इनमें कुछ तो उनकी अपनी प्रकृति के तथा कुछ बाहर की परिस्थितियों के फलस्वरूप सामने आती हैं। प्रकृति की कठिनाइयाँ तब तक बार-बार आती रहेगी, जब तक तुम उन पर विजय न प्राप्त कर लोगे। इनका सामना करने के लिए धैर्य और शक्ति दोनों की आवश्यकता है। पर परीक्षाओं एवं कठिनाइयों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति की प्राणिक सत्ता अवसाद की ओर झुक जाती है।

यह किसी एक के साथ विशेषकर नहीं हुआ है, सभी साधकों के साथ ऐसा ही होता है। यह साधना सम्बन्धी अयोग्यता का द्योतक नहीं है, न ही यह असहायता की भावना को उचित ठहराता है किन्तु आराधनाशील साधक को अवसादरूपी प्रतिक्रिया को जीतने के लिए सद्गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का सघन जाप व नियमित ध्यान करना चाहिए और सहायता के लिए समर्थ सद्गुरुदेव की दिव्य शक्ति का आह्वान करना चाहिए।

सभी जो इस पथ पर दृढ़ता से चलते रहते हैं, अपने आध्यात्मिक भविष्य के संबंध में विश्वस्त रह सकते हैं। यदि कोई लक्ष्य तक पहुँचने में असफल रहता है तो उसका दो में से कोई एक कारण होता है या तो वह इस मार्ग को ही छोड़ देता है या किसी महत्त्वाकांक्षा, अहंकार अथवा कामना के प्रलोभन में पड़कर भगवान् पर अपनी सच्ची निर्भरता से विचलित हो जाता है।

आराधना काल में साधक को विभिन्न प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती हैं। साधक को किसी भी सिद्धि की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि सिद्धियाँ पथ से डिगाने वाली परियाँ होती हैं, जो साधक को चकनाचूर कर देती हैं।

जिस प्रकार हम यात्रा करते हैं, तब हमारी यात्रा के दौरान हम कितने स्टेशनों, भव्य मंदिरों व अन्य स्थलों से गुजरते हैं लेकिन हमारा लक्ष्य तो अंतिम ध्येय तक जाना होता है, इसलिए चाहे हम बस, ट्रेन, कार या किसी भी वाहन में बैठे हैं, केवल दृष्टा भाव से देखते रहते हैं, किसी भी प्रकार की क्रिया नहीं करते हैं, ठीक उसी प्रकार साधक को बिना किसी घमण्ड के, केवल दृष्टा बनकर आध्यात्मिक यात्रा करनी चाहिए।

अहम किसी भी प्रकार का घातक ही होता है। चाहे वह धार्मिक, सामाजिक या आध्यात्मिक हो। जितने भी संतों के अनुभव हैं उनके अनुसार आध्यात्मिक अहम सबसे घातक होता है। इसलिए साधक को सद्गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए, बिना किसी लोभ, लालच के, निरन्तर सद्गुरुदेव द्वारा बताई हुई आराधना को करते रहना चाहिए।

किसी भी आध्यात्मिक पुरूष के पीछे भी गादी व उसकी शक्ति को हड़पने की होड़ लगी रहती है। जबकि आध्यात्मिक पुरूष के कार्य की भौतिक रूप से चिंता करने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि वह परम शक्ति अपने योग्य शिष्य को अपने आप ढूंढ लेती है। वह शक्ति किसी भी अन्य से किसी भी प्रकार का कोई सलाह मशविरा नहीं करती है।

आज ऐसे बहुत से शिष्य हैं जो छोटी छोटी सिद्धियों के लिए व्यर्थ में भटक रहे हैं। सिद्धियों के संबंध में पूज्य सद्गुरुदेव ने अपने कर कमलों से एक पृष्ठ लिखकर दिया था जिसमें स्पष्ट लिखा है कि साधक को सिद्धियों के चक्र में नहीं पड़ना चाहिए।

अपने को गुरुदेव के चरणों में रख कर, और अपने आप को धूल समान समझने में ही सार्थकता है। इस मिशन के प्रसार-प्रचार में भी एक सच्चे प्रचारक को हमेशा, गुरुदेव की शक्ति को ही सर्वोच्च मानकर, अपने आपको तो केवल एक पोस्टमैन की भूमिका ही निभानी चाहिए।

किसको यह ज्ञान देना है और किसको नहीं, इसका फैसला वह दिव्य शक्ति अपने आप कर करती है।

गुरुदेव श्री सियाग अपने प्रवचन में हमेंशा एक ही बात कहते हैं कि ''केवल नाम जपो, नाम जप से परिवर्तन आएगा।'' साधक को अपनी होशियारी से फालतू के नियम, कानून कायदे व अन्य आराधना की पद्धतियों को नहीं अपनाना चाहिए। इससे साधकों में व्यर्थ की भ्रांतियाँ फैलती हैं।

-संपादक

www.the-comforter.org

"प्रभु का दिन चोर की नाई (तरह) आवेगा।"

"पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबल विश्व-व्यापी भीषण नरसंहार की जो घोषणा करता है, विश्व के अविश्वासी नास्तिक उसकी तरफ ध्यान दें या न दें, उसमें कोई अन्तर नहीं आने वाला है। क्या मृत्यु ने कभी किसी को माफ किया है? कालचक्र अनादिकाल से सबको निगलता आया है और निगलता रहेगा। उस निर्दोष पवित्रात्मा यीशु मसीह ने प्राण रक्षा के लिए कैसी करुण पुकार की थी, परन्तु फिर भी क्या वह अपने प्राण बचा सका?

"तब उसने कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरे प्राण निकलता चाहते हैं, तुम ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर, मुँह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता! यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए तो भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"

बाइबल अपनी भविष्यवाणियों के संबंध में स्पष्ट कहती है कि "प्रभु का दिन चोर की नाई (तरह) आवेगा।" उन दिनों में कितना भयंकर संकट होगा, उस संबंध में कहा है- "क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से, जो परमेश्वर से सृजी है, अब तक न तो हुए, और न फिर कभी होंगे। और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया है।" उन दिनों में मानव को कितना भयंकर कष्ट होगा, उसका अन्दाज बाइबल की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है- "उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँढेंगे, और न पाएँगे, और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उनसे (दूर) भागेगी।"

बाइबल का उपर्युक्त वर्णन कितना दिल दहलाने वाला है, कहने की आवश्यकता ही नहीं। परन्तु इस पवित्र ग्रंथ को मानने वालों की वस्तु-स्थिति को ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि अब प्रलय का समय अधिक दूर नहीं है। धार्मिक स्थानों में जो कुछ भी होता है, उस पर कितने सुंदर ढंग से पर्दा डाला गया है- " परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग-पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।" यह कलियुग के गुणधर्म के कारण है। प्रायः सम्पूर्ण विश्व की एक जैसी ही स्थिति है। मैं तो इस संबंध में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रभु विश्व भर के सकारात्मक विचारों वाले मनुष्यों को शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करें क्योंकि नकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति न कभी सुधरे हैं, और न कभी सुधरेंगे। रावण, कंस, दुर्योधन आदि अनेक उदाहरण हर युग में मिलेंगे।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है ?

'जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे ही चेतन व्यक्ति के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।'

जब प्राणी संसार में जन्म लेता है तो वह सांसारिक ज्ञान से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है। वह सर्वप्रथम अपने माता पिता से भौतिक जगत् का ज्ञान प्राप्त करता है, उसके प्रथम गुरु उसके माता-पिता होते हैं। इसके बाद विद्यालय में जाकर भौतिक विद्या का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके बाद वह भौतिक जगत् का ज्ञान, विद्या गुरु से विद्यालय में प्राप्त करता है। इसके बाद ज्यों ज्यों उसका ज्ञान बढ़ता जाता है, उसे आध्यात्मिक जगत्, अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है।

वह धीरे धीरे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार उसे जैसा आध्यात्मिक गुरु मिलता है, उसी स्तर का ज्ञान प्राप्त करके, उस पथ पर चलने लगता है।

देवयोग से अगर रास्ता सही मिल जाता है तो कुछ हद तक अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है। अगर सीधा रास्ता नहीं मिलता तो परिणामों के अभाव में मनुष्य की आस्था धर्म से हट जाती है, वह इसे वर्ग विशेष की जीविका चलाने का व्यापार मात्र मान कर, इस पथ से विमुख हो जाता है। इस प्रकार संसार में ऐसे भ्रमित लोगों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। इस प्रकार इस व्यवसाय में लगे धर्म गुरु, तुच्छदान माँग कर किसी प्रकार अपना जीवन चलाने को विवश हो जाते हैं।

इस प्रकार के आध्यात्मिक गुरुओं की दशा देखकर संसार के लोगों के दिल में धर्म के प्रति ग्लानी पैदा हो जाती है। जब संसार में यह स्थिति चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब भगवान् को अवतार लेना पड़ता है। यह वही स्थिति होती है, जिसका वर्णन भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में इन श्लोकों में किया है: -

यदा यदा हि धर्मस्य,
ग्लानीर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।।4:7
परित्राणाय साधुनां
विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे।।4:8।।

इस समय संसार में धर्म कैसी

स्थिति में पहुँच चुका है, इससे आगे का पथ ही बंद हो जाता है। अतः ईश्वर का अवतार होने का यह उपर्युक्त समय है। संसार भर के प्रायः सभी संतों ने उस शक्ति के प्रकट होने के संकेत दे दिये हैं। महर्षि अरविन्द ने तो भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार लेने की निश्चित तिथि की घोषणा कर दी थी।

श्री अरविन्द के अनुसार वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ सन् 1993-94 तक संसार के सामने प्रकट होकर अपने तेज से पूरे जगत् को प्रभावित करने लगेगी। इस प्रकार 21 वीं सदी में पूरे संसार में एक मात्र सनातन धर्म की ध्वजा फहरायेगी। 'जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे ही चेतन व्यक्ति के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।' इस प्रकार के संत सद्गुरु के प्रकट होने पर संसार का अन्धकार दूर होने में कोई समय नहीं लगता। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है। ''ईश्वर के धाम का रास्ता मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है।'' हमारे सभी संत कह गए है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड (शरीर) में है। अतः अन्तर्मुखी हुए बिना उस परमसत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार असम्भव है। श्री अरविन्द ने भी कहा है,''हिन्दू धर्म के शास्त्रों में बताई गई विधि से, मैंने अपने अन्दर ही उस पावन पथ पर चलना प्रारम्भ कर दिया है, जिस पर चलकर उस परमसत्ता से साक्षात्कार संभव है।

उससे जुड़ने वाले व्यक्ति को उस पथ पर चलकर अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कठिनाई नही होती है। वह पूर्ण शुद्ध चेतन आध्यात्मिक शक्तियों के संरक्षण में अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न पूरी करके अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होते हैं।

हमारे शास्त्रों के अनुसार मनुष्य शरीर में छः चक्र होते हैं। बिना चेतन गुरु के, संरक्षण के, कोई व्यक्ति आध्यात्मिक आराधना प्रारम्भ करता है तो सफलता संदिग्ध होती है, उसे अपनी आराधना मूलाधार से प्रारम्भ करनी होती है। उस स्थान से चलकर छठे चक्र तक पहुँचने में, उसे कई मायावी सिद्धियों से सम्पर्क करना होता है। ये शक्तियाँ इतनी प्रबल होती है कि जीव को अपनी सीमा से बाहर नहीं जाने देती है। अगर किसी प्रकार जीव उठता-पड़ता नाभि चक्र में प्रवेश कर भी जाता है तो उससे पार निकलना असम्भव है।

एक माह के थोड़े समय में ही शास्त्रों में वर्णित उन सभी आध्यात्मिक शक्तियों से साक्षात्कार होने लगा है, जो उस परमसत्ता तक पहुँचाने में सक्षम सहयोगी है। इस प्रकार मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि मैं अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकूँगा। ठीक इसी प्रकार इसी रास्ते से चलकर पूर्ण सत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार किया हुआ चेतन व्यक्ति ही गुरु पद का अधिकारी होता है। ऐसा चेतन संत सद्गुरु ही संसार का कल्याण कर सकता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी से पत्रकारों ने अन्त समय में केवल एक ही प्रश्न पूछा था। ''आप भारत में सर्वोच्च राजनीति के शिखर तक पहुँचे हुए पहले व्यक्ति है। आप एक मात्र भारतीय हैं जो वॉयसराय लॉर्ड के पद पर आसीन हुए। अब संसार से विदा होते समय आपको कैसा लग रहा है ? राजाजी ने उतर दिया -

''मेरे इस अन्तिम समय में, जब मैं, मेरे पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो मुझे भारी पश्चाताप होता है। मैं देख रहा हूँ, मेरे जीवन की कमाई का एक गन्दा राजनीति का घोंघा मेरे हाथ में है। मुझे इस गंदे घोंघे को लेकर आगे की यात्रा पर जाना पड़ेगा, यह देख कर मुझे भारी वेदना हो रही है। मैंने अमूल्य मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गवाँ दिया, इसका मुझे भारी पश्चाताप हो रहा है''।

राजाजी जैसे व्यक्ति की अनुभूति से भी किसी ने सबक नही लिया। संसार भर के सभी धर्माचार्य और तथाकथित अध्यात्मवादी राजनीति की धुरी के, याचक बन कर चक्कर लगा रहे हैं।

www.the-comforter.org

इस समय सारा संसार इसी चक्र की शक्ति के इशारे पर नाच रहा है। इस क्षेत्र में पतन के सभी साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस शक्ति के भंवरजाल में फँसकर जीव अन्त समय में भारी पश्चाताप करता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी से पत्रकारों ने अन्त समय में केवल एक ही प्रश्न पूछा था। ''आप भारत में सर्वोच्च राजनीति के शिखर तक पहुँचे हुए पहले व्यक्ति है। आप एक मात्र भारतीय हैं जो वॉयसराय लॉर्ड के पद पर आसीन हुए। अब संसार से विदा होते समय आपको कैसा लग रहा है? राजाजी ने उत्तर दिया -''मेरे इस अन्तिम समय में, जब मैं, मेरे पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो मुझे भारी पश्चाताप होता है। मैं देख रहा हूँ, मेरे जीवन की कमाई का एक गन्दा राजनीति का घोंघा मेरे हाथ में है। मुझे इस गंदे घोंघे को लेकर आगे की यात्रा पर जाना पड़ेगा, यह देख कर मुझे भारी वेदना हो रही है। मैंने अमूल्य मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गवाँ दिया, इसका मुझे भारी पश्चाताप हो रहा है''। राजाजी जैसे व्यक्ति की अनुभूति से भी किसी ने सबक नही लिया। संसार भर के सभी धर्माचार्य और तथाकथित अध्यात्मवादी राजनीति की धुरी के, याचक बन कर चक्कर लगा रहे हैं। राजाजी के अनुसार उसी गन्दे घोंघे से मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना कर रहे हैं। वह गन्दा घोंघा किस स्थान पर रहता है और उसके क्या गुण धर्म है? सर्व विदित है। कहने की आवश्यकता नहीं, ये आध्यात्मिक गुरु संसार को किस दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार ''जिस समय राज सत्ता, अध्यात्म सत्ता के अधीन हो कर उसके निर्देशानुसार कार्य करने लगेगी, धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।''हम देख रहे हैं, इस समय उल्टी गंगा बह रही है। ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण असम्भव है।

चेतन संत सतगुरु जो कि सभी मायावी शक्तियों को पराजित करके 'अगम लोक' की सत्ता से जुड़ चुका होता है, संसार का कल्याण करने में सक्षम होता है। छठे चक्र यानि आज्ञाचक्र तक सारा क्षेत्र माया का क्षेत्र है, इस क्षेत्र को बिना संत सत्गुरु की कृपा के, पार करना असम्भव है। संत सतगुरु क्योंकि मायातीत परमसत्ता से सीधा सम्पर्क रखते हैं इस लिए मायावी शक्तियाँ, उनके आगे करबद्ध खड़ी रहती हैं। इस प्रकार जो जीव ऐसे चेतन संत सतगुरु की शरण में चला जाता है, अनायास स्वत:ही मायावी क्षेत्र को पार कर लेता है। इस प्रकार उसकी परम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा सीधा आज्ञाचक्र को भेद कर प्रारम्भ होती है। गुरु कृपा से ज्यों ही आज्ञाचक्र को भेद कर जीव मायावी शक्तियों से निकल जाता है, उसके पतन के सारे रास्ते अवरूद्ध हो जाते हैं। केवल एक रास्ता परम धाम का खुला रह जाता है, जिस पर चलकर परमसत्ता में लीन होने पर आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

इस प्रकार सनातन धर्म में गुरु पद की जो महिमा गाई गई है। पूर्ण सत्य है। बिना गुरु के आराधना करने पर माया के क्षेत्र की, भौतिक जगत् की सारी सुख सुविधाएँ मिलना सम्भव है, परन्तु मोक्ष सम्भव नहीं है। मोक्ष तो मात्र संत सतगुरु की शरण में जाने से मिलता है। एक बार मायावी शक्तियों के चक्कर में आ जाने के बाद उसका पतन अवश्यंभावी है।

इस प्रकार असंख्य जन्मों तक ऊपर उठ उठ कर, गिरता रहता है और फिर मूलाधार से चढ़ाई प्रारम्भ करनी पड़ती है। इस प्रकार उठा-पटकी का अन्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक जीव संत सतगुरु की शरण में नही चला जाता है। ऐसे कृपालु संत सत्गुरु का पद, अगर भक्त ईश्वर से बड़ा मानें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
06.02.1988

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक उत्थान के लिए गुरुदेव से करूण प्रार्थना

''आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, गुरु आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा Correct (सही) जवाब देगा।''

आप किसी भी समस्या के समाधान के लिए गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। गुरुदेव ही आपको, आपके अंदर से जवाब देंगे। साधक चाहे कितना ही पहुँचा हुआ हो, उनके प्रति श्रद्धा या उनसे ये नहीं कहना कि मेरी ये समस्या है, आप गुरुदेव से ध्यान में पूछकर बताओ कि इसका क्या हल हो सकता है ?

गुरुदेव ने कहा है कि – ''आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, गुरु आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा Correct (सही) जवाब देगा।'' इसलिए आप केवल मात्र गुरुदेव के प्रति ही निष्ठावान रहें और अपने जीवन कल्याण के लिए गुरुदेव के प्रवचन सुनें। गुरुदेव की वाणी में ही प्रभाव है। आस्था खण्डित नहीं होनी चाहिए।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध, शुद्ध-अशुद्ध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने की पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिसमें साधक दिग्भ्रमित हो जाता है। यदि सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो इस मार्ग पर चल पाना अत्यन्त कठिन है।

प्राचीन काल से आज तक जो भी इस मार्ग पर आरूढ़ हुए हैं, उनको मार्ग में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों से पाला पड़ा है। साधक को अपने विवेक से चलना होता है। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने बहुत जगह साधकों को समय समय पर कई विषयों पर समझाया है।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा मार्ग में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए और पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे।

योगारूढ़ साधकों के लिए कुछ प्रयास कर रहे हैं ताकि आने वाली कठिनाईयों का सामना करते हुए योग मार्ग पर आगे बढ़ते रहें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां के सहित कई प्राचीन योगियों की आराधना के समय, इस मार्ग के साधकों का जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिसे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

श्री अरविन्द के बंगला साहित्य से कुछ वार्तालाप के अंश लिये गए हैं जिसमें कुछ साधक और साधिकाएँ, श्रीमां को संबोधित करते हुए अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए पत्र लिखते थे और श्री अरविन्द उनके जवाब देते थे।

श्री अरविन्द-यह सच नहीं है कि विरोधी शक्ति तुम्हारे भीतर ही है-विरोधी शक्ति बाहर भी है। आक्रमण करके भीतर प्रवेश करने की चेष्टा करती है-इस तरह के भय और उद्वेग को आश्रय न दो।

प्रश्नः- दो-तीन दिन से देख रही हूँ कि आश्रम में और आश्रम के वातावरण में एक खराब शक्ति और एक अच्छी शक्ति घूम रही है। मेरी अनुभूति में कुछ सच्चाई है क्या ?

उत्तरः- जैसे बहिर्जगत् में वैसे ही आश्रम में भी ये दोनों शक्तियाँ आरंभ से ही विद्यमान हैं। अशुद्ध शक्ति को विजित कर सिद्धि पानी होगी।

प्रश्नः- सब लोग हर पल तुम्हें अनुभव कर, ध्यान कर शांतभाव से बढ़ रहे हैं। मैं ही क्यों तुम्हें भूलकर द्वंद्व, मिथ्या शक्ति और विरोधी शक्तियों की बाधा से हमेशा आक्रांत हो जाती हूँ ?

उत्तरः- सब कौन ? एक-दो को छोड़कर कोई शांतभाव से नहीं चल रहा, सभी बाधाओं को चीरकर ही आगे बढ़ रहे हैं। (कुछ साधक इस तरह की शिकायत करते रहते हैं कि मैं आराधना करता हूँ फिर भी ऐसी बाधाएँ क्यों आती है ? मेरे जैसी बाधा किसी के नहीं आती है, मैं हूँ कि इसे झेल पा रहा हूँ। इस तरह के तामस विचारों में पड़ने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। अपने प्रारब्ध के अनुसार कम-ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन साधक अपने सद्गुरु के प्रति गाढ़ी प्रीति भाव से, पूर्ण निष्कपट भाव से, सम्पूर्ण समर्पण भाव से, 'सद्गुरु ही सर्वोपरि है' के परमोच्च भावों से भरपूर, आराधना करता रहे, फिर बाधा कब आई और कब गई, पता ही नहीं चलेगा।)

इससे भयभीत अथवा विचलित न होओ। योगपथ का यह नियम है कि आलोक और अंधकार की अवस्था अतिक्रम (लांघकर) कर चलना होता है। अंधकार छा जाने पर भी शांत बनी रहो।

Persevere in the attitude of firmness and courage- इस दृढ़ता और साहस के भाव को हमेशा पकड़े रहो।

(Red Lotus)-The Divine Harmony- (लाल कमल)-भागवत सामंजस्य।

(Blue Light)-The Higher Consciousness- (नील वर्ण)-उच्चतर चेतना।

(Golden Temple)-The Temple of the Divine Truth- सत्य का देवालय।

स्थिर धीर बनी रहो, तभी तुम्हारे

www.the-comforter.org
www.the-comforter.org

बाहर भी, बहिर्प्रकृति में, जीवन में धीरे-धीरे यह सब प्रतिफलित होगा।

बाधाएँ सबके सामने आती हैं। आश्रम में ऐसा कोई साधक नहीं जिसे इसका सामना नहीं करना पड़ता। अपने भीतर स्थिर बनी रहो, बाधाओं के होते हुए भी सहायता पाओगी, सत्य चैतन्य सब स्तरों पर प्रस्फुटित होगा।

शांतभाव से शक्ति (गुरु) को पुकार कर, सब उद्वेगों को छोड़कर हर समय स्थिर रहो।

तुम्हारा सबसे बड़ा अंतराय है प्रतिक्षण बाधा के बारे में ही बात करना कि मैं खराब हूँ, मैं खराब हूँ, इत्यादि के बारे में ही चिंता। शांतभाव से शक्ति पर निर्भर रह, स्थिर भाव से साधारण प्रकृति का परिहार कर धीरे-धीरे विजय पाना ही है परिवर्तन लाने का एकमात्र उपाय।

यह क्या और भी बड़ा अहंकार नहीं है कि तुम्हारे लिये ही इतना काण्ड घटा है? मैं बहुत अच्छी हूँ, खूब शक्ति शाली हूँ, मेरे द्वारा ही सब हो रहा है, मेरे बिना शक्ति का काम नहीं चल सकता-यह है एक तरह का अहंकार। मैं खराब से भी खराब हूँ, मेरी बाधा के कारण सब बंद हुआ है, भगवान् अपना काम नहीं कर पा रहे-यह है और एक तरह का उल्टा अहंकार।...

यह है तुम्हारे भीतरी मन और शक्ति के भीतर मन का संबंध-भ्रूमध्य में है उस मन का Centre (केंद्र)-यह संबंध जब स्थापित हो जाता है तब उस भीतरी मन में भागवत सत्य के प्रति आकर्षण होता है और वह उठना आरंभ करता है।

अर्थात् जब अन्तरात्मा से गुरु-शिष्य का संबंध प्रगाढ होता है, तभी साधक में परिवर्तन आता है।

ॐश्री गंगाईनाथाय नमः

'मेरे लिए तो गुरु ही सर्वोपरि है।'

मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे।

मेरे संत सद्गुरुदेव की असीम अहैतु की कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

सहायक कब आवेगा ?

तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। और बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत् में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

यीशु मसीह ने पंचभौतिक शरीर में रहते हुए, उस सहायक के आने का समय नहीं बताया, जिसे भेजने की उसने भविष्यवाणी की थी। परन्तु उस समय संसार की कैसी स्थिति होगी. उसे बताते हए अपने शिष्यों को समझाते रहे।

संसार की स्थिति का वर्णन करते हुए सैंट मैथ्यु के २४:१ से ३६ में कहा है- ''जब यीशु मंदिर से निकल कर जा रहा था तो उसके चेले, उसको मंदिर की रचना दिखाने के लिए उसके पास आये। उसने उनसे कहा, क्या तुम यह सब नहीं देखते ? मैं तुम्हें सच्च कहता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं छूटेगा, जो ढाया न जाय।'' जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, हमसे कह कि ये बातें कब होंगी ? और तेरे आने का और जगत् के अन्त का (युग परिवर्तन का) क्या चिह्न होगा ?

यीशु ने उनको उत्तर दिया, ''सावधान रहो, कोई तुम्हें न भरमाने पाये। क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मैं मसीह हूँ, और बहुत सों को भरमाएंगे। तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे, देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे और भुइडोल (भुकम्प) होंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। तब वे क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुमसे बैर रखेंगे।

तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। और बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत् में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को, जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खाड़ी देखो (जो पढ़े, वह समझे)। तब जो यहूदियों में हो, वे पहाड़ों पर भाग जाय। जो कोठे पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरें। और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होगी, उनके लिए हाय, हाय। और प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या

सब्त के दिन भागना न पड़े। क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत् के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। और यदि वे दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाये जाएंगे।

उस समय यदि कोई तुमसे कहे कि देखो मसीह यहाँ है या वहाँ है तो प्रतीत न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। देखो, मैंने पहले से तुमसे यह सब कुछ कह दिया है। इसलिए यदि वे तुमसे कहे, देखो वह जंगल में हैं, तो बाहर न निकलना, देखो वह कोठरियों में हैं तो प्रतीत न करना। क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकल कर पश्चिम तक चमक जाती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। जहाँ लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होते हैं।''

''उन दिनों के क्लेश के बाद तुरंत सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएंगी। तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।''

''अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो, जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है। इसी तरह जब तुम इन सब बातों को

देखो तो जान लो, कि वह निकट है, वरन् द्वार ही पर है। मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो ले, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। ''आकाश और पृथ्वी टल जायेंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।''

''उपरोक्त वर्णन यीशु ने पंचभौतिक शरीर में रहते हुए किया। परन्तु उस समय के क्रूर धर्माचार्यों ने अपने स्वार्थवश ही उसे अकारण मृत्युदण्ड दिलवा दिया। जबकि उस समय के शासक ने उसे निर्दोष पाया था। प्रभु की लीला देखो, जिस प्रकार का बदलाव आगे होगा, उसका वर्णन करते हुए यीशु ने कहा है-''भुइडोल होगा, सूर्य अंधियारा हो जावेगा और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा।'' ठीक वैसा ही प्राकृतिक बदलाव उस समय भी हुआ था, जब उस निर्दोष पवित्रात्मा को अकारण ही मृत्यु दण्ड दिलवाया था। आज उन्हीं धर्माचार्यों के वंशज आगे होने वाले प्रकोप के भय से पहले ही कांपने लगे हैं। प्राण तो सभी को एक जैसे प्यारे होते हैं।

उस पवित्रात्मा के मृत्युदण्ड का वर्णन करते हुए, सैंट मैथ्यु के २७:४५ से ५४ में लिखा है- ''दो पहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में 'अंधेरा' छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, ''एली, एली,लमा शवक्ती ? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ?'' जो वहाँ खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, वह तो ''एलिय्याह'' को पुकारता है । (''देखो ! यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास ''एलिय्याह नबी'' को भेजूंगा'' भविष्यवक्ता 'मलाकी' ४:५)'' उनमें से एक तुरन्त दौड़ा और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। औरों ने कहा रह जावो, ''देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।'' तब यीशु ने

www.the-comforter.org

फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये। और देखो मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, और धरती डोल गई और चट्टानें तड़क गई।''

मृत्यु के बाद चालीस दिन तक यीशु की आत्मा मृत्यु लोक में ही घूमती रही । वह आत्मा चालीस दिन तक अपने चेलों से मिलकर परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। चालीसवें दिन उनसे मिलकर आज्ञा दी कि ''यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना (सैंट जॉहन) ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से (में) बपतिस्मा पाओगे।''

(And being assembled togther with them, commanded them that they should not depart from Jerusalem, but wait for the promise of father, which saithbeye have heard of me. For John truly baptized with water] but ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence)

उपर्युक्त हिन्दी अनुवाद कि ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से (मे) बपतिस्मा पाओगे'' भ्रमित करता है। क्योंकि "But ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence" का यह सही अनुवाद नहीं है। क्योंकि Not many days hence का स्पष्ट अर्थ होता है ''एक दिन से अधिक नहीं।''

अतः यह भविष्यवाणी हिन्दी अनुवाद से स्पष्ट नहीं लगती। अतः इस सम्बन्ध में मुझे, इसे समझ पाने के लिए काफी चिन्तन करना पड़ा। उस परमसत्ता द्वारा विशिष्ट प्रकार के दिशानिर्देश द्वारा मुझे समझाया गया, क्योंकि यह भविष्यवाणी यीशु ने नाशवान शरीर को त्यागने के बाद आत्म-भाव से की है, अतः इसका अर्थ ईश्वर के समय के अनुसार ही लगाया जा सकता है, जिसका वर्णन २ पीटर के ३:८ में किया गया है।

ईश्वरीय समय और मृत्युलोक के समय की तुलना करते हुए उसमें कहा गया है--''हे प्रियो, यह एक बात तुमसे न छिपी रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।'' इस प्रकार यीशु की उपर्युक्त भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु लोक के प्रथम एक हजार वर्ष पूर्ण होने पर ईश्वर का एक दिन पूर्ण होता है। जब मृत्युलोक के दो हजार वर्ष पूर्ण हो जावेंगे तो ईश्वर के दो दिन पूर्ण होकर तीसरा दिन प्रारम्भ हो जावेगा।

अतः अगर वह सहायक जो आध्यात्मिक शक्तिपात दीक्षा (Baptized with the Holy Ghost) देगा, इस २०वीं सदी के अन्त से पहले प्रकट नहीं होता है तो यीशु की आत्मभाव से की हुई भविष्यवाणी कि "ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence." असत्य प्रमाणित हो जावेगी। क्योंकि दो दिन पूरे हो कर तीसरा दिन आरम्भ होते ही कई दिन (Many Days) हो जावेंगे। परन्तु उसकी भविष्यवाणी असत्य हो ही नहीं सकती। जो व्यक्ति सत्य के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे गया, झूठ बोल ही नहीं सकता है।

इसीलिये उस पवित्रात्मा ने छाती ठोक कर कहा है-

''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, लेकिन मेरी बातें कभी न टलेंगी।''

यह बात सत्य है कि कलियुग के गुणधर्म के कारण विश्व के सभी धर्मों पर एक ही जैसा प्रभाव पड़ा है। प्रायः सभी धर्मों में नकली धर्माचार्यों का बाहुल्य है। परन्तु ईसाई जगत् की यह मजबूरी है कि उन्हें उस सत्य को ढूँढकर स्वीकार करना ही पड़ेगा।

उस सत्य की पहचान करने के लिए वह पवित्रात्मा ऐसी कसौटी प्रदान कर गया है कि उस पर हर तरह से कसने पर जो खरा प्रमाणित होगा, उसी को स्वीकार किया जायेगा। जिन बातों को उसे प्रमाणित करना है, वे सभी बौद्धिक तर्क और शब्द जाल से प्रमाणित हो ही नहीं सकती।

अतः झूठा व्यक्ति किसी प्रकार सफल हो ही नहीं सकेगा। सभी भविष्यवाणियों के अनुसार उसे क्रियात्मक ढंग से मानवीय वृत्तियों में आमूलचूल परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखनी पहली कसौटी है। और यह कार्य ईश्वर कृपा और सद्गुरु के आशीर्वाद बिना असम्भव है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

युग परिवर्तन के इस संधिकाल में

धनबल पर प्रभु का कहर

www.the-comforter.org

''मैं पश्चिम के लोगों से आग्रह पूर्वक कहना चाहूँगा कि धनबल के सहारे विश्व के गरीब लोगों का शोषण किया जा रहा है, उस पर युग परिवर्तन के इस संधिकाल में पुनर्विचार करें, ऐसा न हो कि फिर पछताना पड़े। मैं उन्हें बाइबल के निम्न संदर्भों पर रात-दिन चिन्तन करने की सलाह देता हूँ। हो सकता प्रभु की कृपा हो जाए।

सैंट मैथ्यु 19:23 व 24 ''तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान का, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। फिर तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से, ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।'' इस संबंध में, मैं प्रभु से सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना ही कर सकता हूँ।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ईश्वर मिलने का तरीका है-शिशु सुलभ

हमारे दर्शन का उच्चत्तम दिव्य-विज्ञान है

8 साल के एक बच्चा ने 1 रूपये का सिक्का मुट्ठी में लेकर एक दुकान पर जाकर कहा क्या आपके दुकान में ईश्वर मिलेंगे ?

दुकानदार ने यह बात सुनकर सिक्का नीचे फेंक दिया और बच्चे को निकाल दिया।

बच्चा पास की दुकान में जाकर 1 रुपये का सिक्का लेकर चुपचाप खड़ा रहा !

ए लड़के ! एक रुपये में तुम क्या चाहते हो ?

मुझे ईश्वर चाहिए। आपके दुकान में है ?

दूसरे दुकानदार ने भी भगा दिया।

लेकिन, उस अबोध बालक ने हार नहीं मानी। एक दुकान से दूसरी दुकान, दूसरी से तीसरी, ऐसा करते करते कुल चालीस दुकानों के चक्कर काट लिये। सब जगह ठोकर ही मिली। किसी से भी आशावादी उत्तर नहीं मिला।

कहावत है कि जिसने भगवान् भरोसे यात्रा शुरू कर दी। उसकी यात्रा भगवान् ही पूरी कराता है। बालक आगे बढ़ा और एक बूढ़े दुकानदार के पास पहुँचा। वही कोमल तुतलाती लड़खड़ाती आवाज में बोला-मेरे पास एक रुपया है-''मुझे भगवान् चाहिए।''

उस बूढ़े दुकानदार ने पूछा,

तुम ईश्वर को क्यों खरीदना चाहते हो ? क्या करोगे ईश्वर लेकर ?

पहली बार एक दुकानदार के मुँह से यह प्रश्न सुनकर बच्चे के चेहरे पर आशा की किरणें लहराईं। लगता है इसी दुकान पर ही भगवान् मिलेंगे !

बच्चेने बड़े उत्साह से उत्तर दिया इस दुनिया में माँ के अलावा मेरा और कोई नहीं है। मेरी माँ दिनभर काम करके मेरे लिए खाना लाती है। मेरी माँ अब अस्पताल में है। अगर मेरी माँ मर गई तो मुझे कौन खिलाएगा ?

डॉक्टर ने तो कहा है कि अब सिर्फ भगवान् ही तुम्हारी माँ को बचा सकता है। क्या आपके दुकान में भगवान् मिलेंगे ? मुझे एक भगवान् चाहिए मेरी माँ के लिए !

हां, मिलेंगे ! कितने पैसे हैं तुम्हारे पास ?

सिर्फ एक रुपया है, मिल जाएगा ना ? मुझे भगवान् दे दो !

कोई दिक्कत नहीं है। एक रुपये में ही भगवान् मिल सकते हैं।

दुकानदार ने बच्चे के हाथ से एक रुपया ले लिया। उसने पाया कि एक रुपये में एक गिलास पानी के अलावा बेचने के लिए और कुछ भी नहीं है। इसलिए उस बच्चे को फिल्टर से एक गिलास पानी भरकर दिया और कहा, यह पानी पिलाने से ही तुम्हारी माँ ठीक हो जाएगी।

अगले दिन कुछ मेडिकल स्पेशलिस्ट उस अस्पताल में गए। बच्चे की माँ का ऑप्रेशन हुआ और बहुत जल्द ही वह स्वस्थ हो गई।

डिस्चार्ज के कागज पर अस्पताल का बिल देखकर उस महिला के होश उड़ गए। डॉक्टर ने उन्हें आश्वासन देकर कहा, ''टेंशन की कोई बात नहीं है। एक वृद्ध सज्जन ने आपके सारे बिल चुका दिए हैं। साथ में एक चिट्ठी भी दी है।''

महिला चिट्ठी खोलकर पढ़ने

लगी, उसमें लिखा था-

''मुझे धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको तो स्वयं ईश्वर ने ही बचाया है। मैं तो सिर्फ एक माध्यम हूँ''। यदि आप धन्यवाद देना ही चाहती हैं तो अपने अबोध बालक को दीजिए, जो सिर्फ एक रुपया लेकर ईश्वर को ढूँढने निकल पड़ा। उसके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि एकमात्र ईश्वर ही आपको बचा सकते हैं।''

महिला ने अपने अबोध बालक को अपने सीने से लगा लिया। ईश्वर को मन ही मन में याद करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की और वृद्ध को भी बहुत ही सम्मान से नमस्कार कर विदा किया।

जब सारी दुनिया का विज्ञान हार जाता है, मनुष्य की बनाई दवाई काम नहीं करती है तब राम दुहाई ही काम आती है।

विश्वास, इसी को ही कहते हैं। भगवान् को ढूँढने के लिए करोड़ों रुपए दान करने की जरूरत नहीं होती, यदि मन में अटूट विश्वास हो तो वह एक रुपये में भी मिल सकता है।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि जब दुनिया का सारा विज्ञान हार जाता है, मनुष्य की बनाई दवाई काम नहीं करती है तब राम दुहाई ही काम आती है। यदि कोई सत्य के पथ पर अग्रसर है तो कठिनाईयों को जीता जा सकता है।

ईश्वर मिलने का सहज और सरल तरीका है बालकवत उनके चरणों में अपने आपको समर्पित करना।

नाम खुमारी से विश्व शांति

''ईश्वर के नाम जप से जो दिव्य आनन्द साधक को निरन्तर आता है, उसे संतों ने अपनी भाषा में ''नाम खुमारी''की संज्ञा दी है। इस संबंध में संत सद्गुरु श्री नानक देव जी महाराज ने कहा है-

''भाँग धतूरा नानका उतर जाय परभात,
नाम खुमारी' नानका चढ़ि रहे दिन रात।''

संत श्री कबीर दास जी महाराज ने कहा है-

'नाम अमल' उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै
'नाम अमल' दिन बढ़े सवायो।

अतः जब तक यह नाम खुमारी सम्पूर्ण विश्व को आनन्दित नहीं कर देती, शांति केवल कल्पना ही रहेगी।''

यादों के पल

www.the-comforter.org

हरि नाम के जप के बिना योग सिद्धि संभव नहीं

पतंजलि योगदर्शन में पतंजलि ऋषि ने कहा है कि हरि नाम के जप के बिना कैवल्यपद प्राप्त नहीं किया जा सकता, योग सिद्धि नहीं हो सकती।

समाधिपाद के 24 से 29वें श्लोंकों में ऋषि ने ईश्वर की व्याख्या करते हुए उसके नाम जप से विघ्नों का अभाव और आत्म साक्षात्कार की बात कही है। ऋषि कहता है, '' क्लेश, कर्म, विपाक और आशय -इन चारों से जो संबंधित नहीं है (तथा) जो समस्त पुरूषों से उत्तम है, वह, ईश्वर'' है। उस (ईश्वर) में सर्वज्ञता का बीज (कारण) अर्थात् ज्ञान निरतिशय है। (वह ईश्वर सबके) पूर्वजों के भी गुरु हैं, (सर्ग के आदि में उत्पन्न होने के कारण सबका गुरु ब्रह्मा को माना जाता है, परन्तु काल से अवच्छेद है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता के 10 वें अध्याय के 25 वें श्लोक में नाम जप को अपना स्वरूप बताते हुए, उसे सर्वोत्तम यज्ञ की संज्ञा देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है-

''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि''।। 10:25।।

महाभारत में भी हरिनाम के जप को सर्वश्रेष्ठ धर्म की संज्ञा देते हुए कहा है-

जपस्तु,सर्वाधर्मेभ्यः परमो धर्म उच्यते।
अहिंसया च भूतानां जपयज्ञः प्रवर्तते।।

''समस्त धर्मों में जप ''सर्वश्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि जप-यज्ञ, बिना किसी हिंसा के पूरा होता है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

हमारे दर्शन के अनुसार

'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है

हमारे दर्शन के अनुसार 'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। असंख्य विद्वानों ने गीता पर टीकाएँ लिख-लिखकर अपनी विद्वता का परिचय दिया है। सभी धर्माचार्य गीता से पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि का भय दिखाकर तथा त्याग-तपस्या से जीवन बिताने का उपदेश देते हैं। गीता एक पूर्ण ग्रंथ है। वह जीवन के क्षेत्र का सम्पूर्ण ज्ञान कराती है। अतः तोड़-मरोड़कर उससे हर उपदेश देना संभव है, परन्तु गीता का रहस्य कुछ और ही है। अगर गीता में से 11 वें अध्याय को अलग करके भगवान् 36 अध्यायों का उपदेश दे देते तो भी अर्जुन के कुछ भी समझ में नहीं आता। विराट स्वरूप से जिस प्रकार पूर्ण सत्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवाया गया, उसे देखकर अर्जुन को पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया। उसके बाद अर्जुन के भाव बदल गये, पूछने का लहजा बदल गया। बाद में सभी प्रश्न बहुत ही करूण भाव से पूछे। अतः गीता का रहस्य जितना अर्जुन समझा था, उतना कलियुग का मानव कैसे समझ सकता है?

www.the-comforter.org

सम्पूर्ण गीता अन्तर्मुखी होकर प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का ग्रंथ है। गीता प्रवचन का विषय है ही नहीं। गीता का हर श्लोक स्वयं सिद्ध मंत्र है। अतः गीता रूपी मंदिर में जब प्रभु की मूर्ति स्थापित हो चुकी है, जिसके दर्शन करने से अर्जुन को जिस दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, गीता वही उपदेश देती है। पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने के बाद अर्जुन ने जो कार्य किया, गीता वही कार्य करने का उपदेश देती है। सम्पूर्ण ज्ञान एकाग्रचित होकर सुनने के बाद भगवान् ने पूछा क्या तेरा अज्ञान से उत्पन्न हुआ मोह नष्ट हुआ? तब अर्जुन बोला-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव।।18:73।।

हे अच्युत, आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है, मुझे स्मृति प्राप्त हुई है, मैं संशय रहित हुआ स्थित हूँ और आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

समत्वबोध (समाधि) की स्थिति

विश्व का कोई भी दर्शन क्रियात्मक ढ़ंग से मोक्ष प्राप्ति का पथ प्रदर्शित नहीं करता। यह अद्वितीय दिव्य ज्ञान तो मात्र सनातन धर्म, वेदान्त दर्शन की ही देन है।

''हमारे ऋषियों ने मनुष्य शरीर को विराट स्वरूप प्रमाणित करके उसके अन्दर सम्पूर्ण सृष्टि को देखा। इसके जन्म दाता परमेश्वर का स्थान सहस्रार में और उसकी पराशक्ति (कुंडलिनी) का स्थान मूलाधार के पास है। इन्हीं दोनों के कारण ही सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई। साधक की कुंडलिनी चेतन होकर सहस्रार में लय हो जाती है, उसी को मोक्ष की संज्ञा दी गई है। इसी सिद्धान्त के अनुसार संत सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत करके सहस्रार में पहुँचाते हैं। शक्तिपात से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब क्या होता है, इस संबंध में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जाग्रर्ति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि भिदयन्ति
ग्रन्थयो पिच।।

''स्वात्माराम हठयोग प्रदिपिका''

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का वेधन होता है।''जाग्रत हुई कुण्डलिनी सुषुम्ना नाड़ी में से होकर ऊर्ध्व गमन करने लगती है। वह छह चक्रों-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र और तीनों ग्रन्थियों- ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि एवं रुद्रग्रंथि का वेधन करती है, और अन्त में समाधि स्थिति, जो समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है।

परन्तु विश्व का कोई भी दर्शन क्रियात्मक ढंग से मोक्ष प्राप्ति का पथ प्रदर्शित नहीं करता। यह अद्वितीय दिव्य ज्ञान तो मात्र सनातन धर्म, वेदान्त दर्शन की ही देन है। विश्व के बाकी धर्म बौद्धिक तर्क एवं शब्द जाल के जंजाल में फँसाकर ईश्वर की सत्ता का आभास दिलाने का प्रयास मात्र करते हैं। वे कोई प्रमाण नहीं दे सकते।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

असीम आनंद की प्राप्ति

मैं विशाल सिंह, बीएस सी अंतिम वर्ष, जम्मू का रहने वाला हूँ। मेरी बचपन से ही अध्यात्म में गहरी रूचि रही है। मैं आध्यात्मिक व धार्मिक पुस्तकें पढ़ता रहता हूँ। मुझे सच्चे सद्गुरुदेव की तलाश थी, लेकिन कहीं सफलता नहीं मिल रही थी। एक दिन मैं, मेरी मौसी के घर गया तो वहाँ पर स्पिरिचुअल साइंस मासिक पत्रिका पड़ी थी। कवर पेज की सुन्दरता ने मुझे आकर्षित किया तो मैं पुस्तक लेकर पढ़ने लगा। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने पूरी पत्रिका पढ़ डाली। उसमें लिखी ध्यान की विधि के अनुसार, यूट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) में जाकर संजीवनी मंत्र सुनकर गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान लगाना शुरू कर दिया। मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। मुझे गुरुदेव के दिव्य दर्शन कर उनके श्री चरणों में प्रणाम करना है और दीक्षा लेनी है इसलिए आज दिनांक 4 मई 2020 को जोधपुर आश्रम में कॉल कर पूरी जानकारी प्राप्त की है। आश्रम की वेबसाइट (www.the-comforter.org) से सिद्धयोग दर्शन की जानकारी प्राप्त की।

आश्रम से इनको जानकारी दी गई कि गुरुदेव कश्मीरी शैव सिद्धांत को ही मूर्तरूप दे रहे हैं। ईसा मसीह ने भी कश्मीर में ही ऋषि मुनियों से पवित्र शब्द की दीक्षा (बपतिस्मा) पाई थी और वापस अपने देश यरूशलेम जाकर कहा था कि यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। यह सुनकर उनको बहुत खुशी हुई।

गुरु से दीक्षा लेकर यीशु द्विज बने थे। इसीलिए उसने इस्राएलियों के धर्म गुरु निकुदेमुस को कहा- ''मैं तुझसे सच्च-सच्च कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।''

(मोबाइल पर हुई बातचीत के अंश)

14 वर्षों बाद समर्थ सद्गुरुदेव की प्राप्ति

श्री संजय यादव

अरड़िया बिहार 15.5.2020

संजय यादव जी ने आश्रम में कॉल करके अपने विचार प्रकट किये। उनका कहना था कि वे करीब 18 महीने से गुरुदेव से जुड़े हैं परन्तु उन्हें इस बात की बहुत तकलीफ थी कि आश्रम का नम्बर मिलने से पहले गुरुदेव के नाम पर बने अनेकों Group के साधकों ने उनको बहुत गुमराह किया।

उन्होंने कहा कि इसके बावजूद उन्होंने अपने पास केवल गुरुदेव के प्रवचनों से मिले ज्ञान को ही रखा और उसमें औरों से मिले ज्ञान की मिलावट नहीं होने दी।

वो कहते हैं कि यह तो गुरुदेव का मिशन है इसमें हमारा कुछ भी नहीं है। जो कुछ है गुरुदेव का है। आजकल बाजार में गुरु 2 से 3 हजार रूपये लेने के बाद दीक्षा देते हैं जबकि यह तो हमें फ्री में मिली है। इन्होंने कहा कि यह पहले भी अनेकों गुरु बना चुके हैं पर कोई तृप्ति नहीं हुई। अब 14 सालों के भटकाव के बाद गुरुदेव मिले हैं। इसके साथ ही उन्होंने गुरुदेव द्वारा मिले सिद्धयोग के ध्यान की विधि को अपने परिवार व औरों के साथ भी बांटा।

उन्होंने कहा कि गुरुदेव ने अपना जीवन आश्रम में बिताया और वहीं से मिशन का संचालन किया और उन्हें इस बात से नाराजगी है कि जब किसी को इस संस्था की आवश्यकता नहीं है तो फिर उनको अपनी-अपनी झोपड़ी लगाने की क्या आवश्यकता है ? जिस संस्था की स्थापना कर गुरुदेव ने मिशन का प्रचार किया, उसको मानते नही हैं और अपनी-अपनी चला रहे हैं। इसका उन्हें दुःख है।

आखिर में उन्होंने कहा कि अब उन्होंने अपने घर बाकी सब तस्वीरें हटा कर सिर्फ गुरुदेव की तस्वीर लगा रखी है।

www.the-comforter.org

संजीवनी मंत्र का प्रभाव

तांत्रिक सिद्धियाँ प्रभावहीन हुई। सद्गुरुदेव की अद्भुत शक्ति का एहसास हुआ।

मैं आकाश शर्मा (29 वर्ष), गवालियर (मध्यप्रदेश) का रहने वाला हूँ। मैं एक गाँव में ग्राम सचिव हूँ।

करीब 20-25 दिन पहले किसी ने मुझे गुरुदेव के वीडियो का लिंक भेज दिया। मैंने देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उसको अच्छी तरह से सुन समझकर मंत्र जप और नियमित 15 मिनट ध्यान शुरू कर दिया।

शुरू के चार-पाँच दिन तक तो कोई खास परिणाम नहीं मिला फिर भी मैं मंत्र जप के साथ नियमित ध्यान करता रहा। पाँच-छह दिन बाद मुझे ध्यान में आनंद आने लगा, कुछ क्रियाएँ भी शुरू हो गई। मैं गुरुदेव के मंत्र में खो गया। मुझे बहुत आनंद आने लगा। मन में असीम शांति पसर गई। **आज दिनांक 1 मई 2020 को मैं जोधपुर आश्रम में फोन कर रहा हूँ।**

मुझे कुछ दिन से बड़ी बैचेनी हो रही है। भीतर से भय सा लगने लगा है। पहले मेरा सब कुछ अच्छा चल रहा था। गुरुदेव के संजीवनी मंत्र के जप और फोटो के ध्यान से असीम आनंद की अनुभूति हो रही थी।

अब मेरे एक और समस्या शुरू हो गई कि पहले तो मैं मंत्र जप स्वयं चलाकर करता था लेकिन अब गुरुदेव की आवाज में मंत्र स्वयं चलना शुरू हो गया। मैं कहीं भी हूँ, या रात को जगता हूँ, सुबह उठता हूँ तो भी मुझे मेरे अंदर गुरुदेव स्वयं अपनी आवाज में मंत्र जपते हुए सुनाई देते हैं। ये मेरे साथ क्या हो गया है? मेरा मार्गदर्शन करें।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम से उनको बताया गया कि यह तो आपका सौभाग्य है कि आपका अजपा जाप शुरू हो गया है। जब साधक गंभीरतापूर्वक सघन जाप करता है तो अपने ही भीतर स्वतः जप शुरू हो जाता है, जिसे योग की भाषा में 'अजपा-जाप' कहते हैं।

मेरे साथ एक और घटना घटी है उसका मैं जिक्र करना चाहता हूँ-हमारे पास का एक गाँव है-भाटी। उसमें कुछ दिन पहले एक बाबा आकर ठहर गये और कुछ झाड़-फूँक से लोगों की कुछ परेशानियों व बीमारियों का इलाज करने लगे और किसी किसी के कुछ फायदा होने लगा तो पूरे गाँव में उनकी चर्चा होने लगी।

एक दिन में कुछ ग्रामिणों के साथ उस बाबा के पास गया और उनको इस ज्ञान के बारे में पूछा। मैंने कुछ ज्यादा पूछा तो वह बाबा नाराज से होने लगे फिर कहा कि मेरे पास बहुत ज्ञान है। आप कनेर का पता तोड़कर लाओ, मैं आपको चमत्कार दिखाता हूँ। मैं कनेर का पत्ता तोड़ कर लाया तो बाबा ने कहा कि आपकी जो इच्छा हो सुगन्ध सूंघने की, मैं वही सुगंध सुंघा दूँगा। मैंने गुलाब की इच्छा की और उसके पत्ते को हाथ लगाते ही गुलाब के ताजे फूलों की सुगंध आने लगी। फिर चमेली, मोगरा, गेंदा आदि जो जो सुगंधित फूलों के नाम याद थे, मैं इच्छा करता गया और वह हाथ लगाता तो सुगंध आती थी।

मैंने मन ही मन में सोचा कि मेरे पास गुरुदेव का आध्यात्मिक ज्ञान है, मुझे इसका परीक्षण करना चाहिए। फिर मैंने मन ही मन सद्गुरुदेव भगवान् से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव आपको पता है कि मैं आपके इस ज्ञान का कहीं भी गलत दुरुपयोग नहीं कर रहा हूँ। सिर्फ मुझे यह मालूम करना ही है कि इसकी ये सिद्धियाँ फेल होती हैं कि नहीं! मैंने ऐसा विचार करके उस बाबा से बोला कि आप मुझे वापस गुलाब के फूलों की सुगंध सुंघाओ। उसने कनेर के पत्ते को हाथ लगाकर मुझे दिया कि

www.the-comforter.org

सूंघ लो। यह क्या ! कोई सुगंध नहीं थी, साधारण पत्ते की ही सुगंध थी। मैंने कहा बाबा इसमें तो कोई सुगंध नहीं है। बाबा ने कहा कि ऐसा हो ही नहीं सकता ! बाबा ने भी सूंघा तो वास्तव में गंध नहीं थी। फिर बारी बारी से दो तीन फूलों के बारे में बाबा ने बोला लेकिन कोई सुगंध नहीं थी। बाबा ने एकदम पूछा कि कोई साधना कर रखी है क्या ? मैंने कहा नहीं ! लेकिन बाबा माना नहीं, उसने कहा कि कुछ तो आपके पास है, आपने तो मेरी साधना सिद्धि को ही काट दिया, फेल कर दिया। लेकिन कोई बात नहीं जो कर रहे हो, उसको छोड़ना मत और कोई संशय हो तो फिर जिसने बताया है उनसे ही जानकारी प्राप्त करना।

इस घटना से मुझे बहुत बड़ा आश्चर्य हुआ कि गुरुदेव के मंत्र में तो बहुत बड़ी शक्ति है। मैंने उस बाबा से पूछा कि आपने यह सिद्धि कहाँ से प्राप्त की तो उन्होंने बताया कि मैं यह इक्कीस दिन की आराधना करके कलकता में एक कालीपीठ देवी का मंदिर है, वहाँ से सीखकर आया हूँ।

बाबा ने कहा कि आप इस विद्या को छोड़ना मत। ये मेरे से बहुत बड़ी विद्या है। आपके जीवन में काम आएगी। आपको अद्भुत अनुभूतियाँ होगी, इसलिए आपके पास जो भी विद्या है उसको संभाले रखो। फिर उसने कहा कि मेरे पास धन प्राप्त करने का भी मंत्र है, मैं आपको दे सकता हूँ। मैंने उसे ले लिया और कुछ जपा तो मेरे भीतर भय और बैचेनी बढ़ गई। कुछ दिन मैंने गायत्री मंत्र का भी जप किया तो कुछ राहत मिली लेकिन अब मैं परेशान हो रहा हूँ।

पिछले चार दिन से मुझे लगातार स्वप्न आ रहे हैं और अलग अलग दृश्य दिख रहे हैं जो इस प्रकार है-

रात भर मुझे अजपा लगा रहता है, मुझे गहरी नींद में एक बिल्कुल नग्न काली स्त्री के दर्शन हुए, उसने मुँह खोला तो दाँत भी बिल्कुल काले थे। मैंने सोचा कि ये काली माँ है या कौन है, ऐसे विचार करते हुए मैंने जानने की कोशिश की तो मेरी नींद खुल गई।

दूसरे दिन रात को कोई सौ-डेढ़ सौ बिल्कुल नग्न काले पुरुष पंक्तिबद्ध जाते हुए दिखाई दिये।

तीसरे दिन मैं नदी के किनारे खड़ा हूँ, इतने में एक विशालकाय साँप ने बहुत बड़ा फन फैलाकर मुझ पर फुँफकार मारी और मुझे डस लिया। मेरे भीतर अजपा चल रहा था तो मैं क्या देखता हूँ कि मैं उसके पूँछ में से वापस बाहर निकल गया और मैं जग गया।

जोधपुर आश्रम कॉल करके मैंने मार्गदर्शन करने का अनुरोध किया कि जबकि मैं दो तीन मंत्रों का जाप कर रहा हूँ फिर भी मुझे शांति क्यों नहीं मिल रही है ?

जोधपुर आश्रम से उनको विस्तार से समझाया गया कि ''मंत्र एक ही गुरु का जपना होगा और सद्गुरुदेव सियाग की ही तस्वीर का ध्यान करना है।'' किसी भी प्रकार की सिद्धियों के चक्र में नहीं पड़ना है।

आनंदमय और जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से बढ़कर कोई आराधना नहीं है।

सिद्धियाँ कितनी घातक होती हैं, इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द का एक वृत्तांत है कि उस समय स्वामी विवेकानन्द जी अमेरिका में थे। उस समय एक जाने माने तांत्रिक की अमेरिका में चर्चा थी। वह किसी भी फूल की सुगंध और पसंदीदा खाने की वस्तु सुदूर देश से मँगवा सकता था।

www.the-comforter.org

स्वामी जी ने सुना तो उसके पास चले गए और काफी बातचीत होने के बाद उसने कहा कि आपकी जो इच्छा हो आप कर लीजिए, आपको खाने की वस्तु मिल जाएगी।

स्वामी जी ने जलेबी की इच्छा की जो कलकता की एक प्रसिद्ध दुकान पर मिलती थी। उसने कुछ मंत्र पढ़ा और हवा में हाथ फैलाया और कपड़े के नीचे से जलेबी निकाली और स्वामी जी को एक कटोरी में परोस दी। जब स्वामी जी खाने लगे तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा ! वास्तव में उसी दुकान की जलेबी ! जो स्वामी जी कलकता में खाया करते थे। स्वामी जी ने उनकी प्रशंसा की और चले गए।

दो तीन दिन फिर इच्छा हुई और स्वामी जी अपने शिष्यों के साथ उस तांत्रिक के पास कलकता की जलेबी खाने के लिए आए। स्वामी जी ने देखा कि तांत्रिक बुखार से बुरी तरह से तड़प रहा था। शरीर एक दम गर्म था। उसका हाल बड़ा ही बेहाल था। उसने स्वामी जी से प्रार्थना की कि आज मुझे माफ करना, मैं बुखार से पीड़ित हूँ और मेरा कोई जादू काम नहीं कर रहा है।

स्वामी जी ने पास के बर्तन में से एक पानी का लोटा भरकर कुछ मंत्र बोलकर, उस तांत्रिक को पीने के लिए दे दिया। आश्चर्य ! पाँच मिनट बाद ही उसको राहत मिल गई, जैसे सिर से पानी का घड़ा उतारा हो।

उसने स्वामी जी के पैर पकड़ लिये और कहा कि आप आज नहीं आते तो मैं मर ही जाता। स्वामी जी ने पूछा कि जब आप भारत के कलकता शहर से इतने दूर बैठे मेरी पंसदीदा जलेबी मँगवा सकते हो तो अपना बुखार क्यों नहीं उतार सकते।

उसने कहा कि एक एक सिद्धि के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती थी और यह क्षणिक सिद्धियाँ होती हैं।

तब स्वामी जी ने कहा कि सिद्धियाँ जीवन काल और आध्यात्मिक उत्थान के लिए बड़ी घातक होती हैं। किसी भी साधक को सिद्धियों के चक्र में नहीं फँसना चाहिए।

अपनी जीवन रूपी नैया को सद्गुरु रूपी खेवैया के हवाले कर दो। जीवन धन्य हो जाएगा।

श्री आकाश शर्मा, ग्वालियर म.प्र

''अमर अग्नि''

रूपांतरण का नेतृत्व करने वाले की 'देह' एक संग्रामभूमि है और वहाँ युद्ध चल रहा है सबका, सारे संसार का। सब वहाँ परस्पर मिलता है, और सब वहाँ प्रतिरोध करता है। ठीक तली में, नीचे एक केन्द्रीय बिन्दु है, जीवन और मरण की एक ग्रंथि है, जहाँ संसार के भाग्य की बाजी लगी है। सब एक बिन्दु में सिमट आया है।।

मैं चिरकाल से गहराई में खोद रहा हूँ,
दलदल और गंदगी के अंदर,
एक शय्या सुवर्णसरित् के गीत के लिए,
एक निवास अमर अग्नि के लिए...
सहस्र-सहस्र घाव मेरी देह से झांक रहे...

और उस मार्ग-निर्माता को सभी कठिनाइयों का, यहाँ तक कि मौत का भी सामना करना होगा, उनका अस्तित्व मिटा देने के लिए नहीं बल्कि उनका रूपांतर करने के लिए। पर अपने ऊपर लिए बिना किसी चीज का रूपांतर नहीं किया जा सकता।

संदर्भ-श्री सत्प्रेम...''चेतना की अपूर्व यात्रा'' के पृष्ठ-368 पर

www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग-सरल और सहज पद्धति

सर्वप्रथम सदगुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग एवं दादा गुरुदेव श्री गंगाईनाथ जी महाराज के चरणों में कोटि कोटि नमन जिन्होंने नाथमत की इस अमूल्य देन को जनसाधारण तक पहुँचाया।

मैं करीब दो साल से मानसिक तनाव, फोबिया (अकारण अत्यधिक चिंता व भय लगना), पैनिक डिसऑर्डर और पैनिक अटैक्स जैसी भयंकर समस्या से ग्रसित होने के कारण चिकित्सालयों के चक्कर लगा रहा था। धीरे धीरे और भी कई शारीरिक बीमारियाँ होनी शुरू हो गयी, जितनी बीमारियाँ उतनी दवाइयाँ। दिन भर बैग में दवाइयाँ साथ रखनी पड़ती थी। फिर एक दिन मेरे सहकर्मी भाटी जी के घर जाना हुआ तो वो शाम को गुरुदेव की तस्वीर के आगे ध्यान कर रहे थे और योग कर रहे थे।

घर आकर सोचा कि ये तो वो ही गुरुदेव है जिनका ध्यान पड़ोस के अंकल जी और उनके घर वाले भी करते हैं। जिज्ञासावश उनको फोन करके पूछा कि आप किस का ध्यान कर रहे थे तो उन्होंने बताया की ये गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की तस्वीर ही ध्यान और योग करवा रही थी, मैं तो बस बैठा था, फिर गुरुदेव के बारें में पूरी जानकारी दी और बताया कि लाखों लोगों की हर बीमारी बस इनकी तस्वीर के ध्यान से ठीक हो रही है। पहले आपको समझ में नही आएगा, आप खुद अनुभव करो। फिर अगले दिन मैं पड़ोसी अंकल प्रवीण जी के घर गया और उनसे गुरुदेव के बारे में जानकारी ली तो उन्होंने एक तरह एक गुरुभाई के समस्या थी उनका अनुभव पढ़ा जो पूरी तरह ठीक हो चुके थे, मेरे मन में भी विश्वास जगा, पर कुछ शंकाएँ थी। असमंजस में महादेव जी, हनुमान जी, रामदेव जी महाराज से प्रार्थना स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका और गुरुदेव की फोटो देकर कहा की ध्यान अनुभव करने की चीज है।

मैंने ध्यान करना शुरू नहीं किया, फिर बीमारी और ज्यादा बढ़ी तो एक दिन स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका पढ़ी जिसमें बिलकुल मेरी की कि भगवान कहीं गलत उलझा मत देना और ध्यान करने बैठ गया लेकिन ध्यान नहीं लगा।

फिर तीन चार दिन तक कोशिश की, फिर भी नहीं लगा लेकिन मुझे दवाईयों की आवश्यकता नहीं पड़ रही थी जो चमत्कारिक लगा क्योंकि

- असहनीय पीड़ाओं से ग्रसित था।
- हर समय दवाईयाँ खानी पड़ती थी।
- जीवन कुण्ठित हो गया था।
- एक दिन एक सहकर्मी को गुरुदेव सियाग का ध्यान करते देखा।
- उसके बाद मेरे मन में भी गुरुदेव का ध्यान करने का विचार आया।
- मैंने हर तरह से पूरी जानकारी प्राप्त कर सद्गुरुदेव का ध्यान करना शुरू कर दिया।
- मंत्र जप और ध्यान करते हुए भी बीच बीच में काफी परेशानियों से सामना करना पड़ा।
- मैंने हिम्मत नहीं हारी और गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए आराधना करता रहा।
- गुरुदेव की असीम कृपा से आज जीवन सत्य के पथ पर है।
- इस आराधना काल में साधक को धैर्यपूर्वक आराधना करते रहना चाहिए।
- आराधना काल में आने वाली कठिनाई प्रारब्धवश आती हैं और सदा के लिए क्षीण होती जाती हैं। जैसे घर की सफाई करने पर धूल का उड़ती है लेकिन कुछ समय बाद पूरा फर्श साफ हो जाता है, वैसे ही भीतर की गहराईयों में जब संजीवनी मंत्र और नियमित ध्यान का स्पंदन होता है तो हमारे प्रारब्ध कर्म वश जनित कठिनाइयाँ सामने आ जाती हैं और कुछ समय बाद पूरी तरह से क्षीण हो जाती हैं। इसलिए अनवरत आराधना करते रहिए।

www.the-comforter.org

वो दवाईयाँ तो नशे की रहती हैं जो लेनी ही पड़ती हैं, अचानक छोड़ नहीं सकते। लेकिन ध्यान न लगने पर मैंने दूसरे गुरुभाईयों को बार बार परेशान न करने के आशय से गुरुदेव के जोधपुर **आश्रम के नम्बर पर फोन किया। आश्रम से एक साधक ने कहा कि आप तो हर समय सघन मन्त्र जपो, ध्यान लगाने का काम तो गुरुदेव का है आप तो बस 15 मिनट के लिए प्रार्थना करके बैठो।** मैंने पूछा कि मंदिर जाने आदि के कारण तो दिक्कत नहीं आ रही तो उन्होंने समझाया कि गुरुदेव ने कभी कुछ छोड़ने को नहीं बोला, आप तो ध्यान लगाते रहो अपने आप निर्देश मिलने शुरू हो जाएंगे क्या सही है, क्या गलत है? जिसके बाद शंकायें दूर हुईं।

एक दिन यूँ ही गुरुदेव की वेबसाइट (www.the-comforter.org) खोली और उसमें उपलब्ध स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका के सारे संस्करण पढ़ लिए। हर पत्रिका में मेरे मन में उठने वाले सवालों के जवाब मिलते गए और आस्था दृढ़ होती गयी।

अभी भी ध्यान लगना शुरू नहीं हुआ था और मानसिक जाप में भी परेशानी आ रही थी। 7-8 दिन तक नहीं हुई तो मैंने परेशान होकर मेरे सहकर्मी गुरुभाई को फोन किया तो उन्होंने कहा कि आप ध्यान की चिंता मत करो, गुरुदेव आपकी परीक्षा ले रहे हैं। आपका काम चालू है आप बस अटल और नियमित रहो, मैंने सोचा कोई परेशानी नहीं है ध्यान लगेगा तब लग जायेगा। फिर अचानक एक दिन बीमारी बहुत बढ़ गयी तो मैंने घबराकर फिर फोन किया तो उन्होंने समझाया कि एक बार हमारे अंदर की नकारात्मक शक्तियाँ विरोध करती हैं, आप

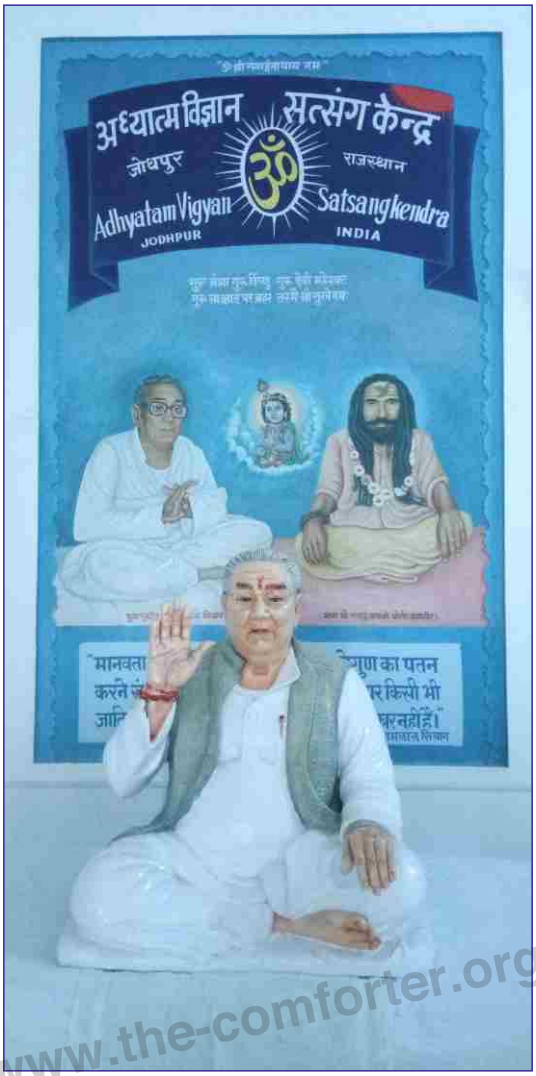

विश्वास रखो कुछ नहीं होगा, बस प्रार्थना करो। मैंने प्रार्थना की तो बस प्रार्थना मात्र से ही मेरा मन शांत हो गया। लेकिन गुरुदेव समय समय पर परीक्षा लेते रहे। एक दिन विचार आया कि हर प्रार्थना सुनकर अविलम्ब चिंता हरने वाले गुरुदेव के रूप में स्वयं कृष्ण भगवान् ही हैं लेकिन लोग मान नहीं रहे हैं और सामने पड़ी भागवत गीता के कुछ पन्ने पलटे तो एक श्लोक दिखा जिसमें लिखा था :-

अवजानन्ति मां मूढा
मानुषीं तानुमाश्रितम।
परं भावमजानन्तो
मम् भूतमहेश्वरम्।।

''जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ, तो मूर्ख लोग मेरा उपहास करते हैं। वे मुझ परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को नहीं जानते।''

अनन्याश्चिन्तयन्तो
मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां
योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

''किंतु जो लोग अनन्यभाव से मेरे दिव्यस्वरूप का ध्यान करते हुए निरन्तर मेरी पूजा करते हैं, उनकी जो आवश्यकताएँ होती हैं, मैं उन्हें पूरा करता हूँ और जो कुछ उनके पास है, उसकी रक्षा करता हूँ।''

अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि भगवान् ने अवतार ले लिया है, और गुरुदेव का ध्यान करता रहा। लेकिन गुरुदेव जी परीक्षा लेते रहे जिससे मैं काफी परेशान हो गया। एक दिन एक और गुरुभाई से परिचय हुआ जो बहुत पुराने साधक थे। उनसे बात की तो उन्होंने भी सिद्धयोग के विषय में समझाया और कहा कि जैसे-जैसे रास्ते में आपके प्रारब्धकर्म आते हैं उनको दूर करने के दौरान आपको परेशानी महसूस होती है लेकिन अब

www.the-comforter.org

आप सही जगह हो। मुझे पूरा विश्वास है क्योंकि आज तक ऐसी कोई बीमारी नहीं, जो गुरुदेव के ध्यान से ठीक ना हुई हो। ये एकमात्र सबसे आसान रोग मुक्ति और मोक्ष पाने का उपाय है। आप तो बस ध्यान-जप करते रहो। मन में विचार आया की क्या ध्यान से पाप भी कटते हैं, तभी एक श्लोक पढ़ा सामवेद के ध्यानबिंदुपनिषद का :-

यदि शैलसम पापं
विस्तीर्ण बहुयोजनम।
भिध्यते ध्यानयोगेन
नान्यों भेदरू कदाचन।।

अर्थात कई योजन तक फैला हुआ पहाड़ के समान यदि पाप हो तो भी वह ध्यानयोग से नष्ट हो जाता है, इस योग के समान पापों को नष्ट करने वाला कभी कुछ नहीं हुआ।

जो भी शंका, सवाल मन में उठे गुरुदेव ने किसी न किसी रूप में उसका उत्तर दे ही दिया।

अभी चार महीने ही हुए हैं लेकिन मुझमें निरन्तर अभूतपूर्व सुधार हो रहा है, मुझे इस दौरान जो भी परेशानियाँ आयीं उनका भी निवारण स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका में मुझे मिला।

उसमें लिखा था पतंजलि योग दर्शन के समाधिपाद के 30वें सूत्र में सविस्तार से वर्णन है कि साधक को आराधना के दौरान व्याधि, स्तयान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रांति दर्शन, अलब्धभूमिकत्व और अनवस्थितितत्व जैसी कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है लेकिन जो साधक सदगुरु के शरणागत होकर ध्यान और मन्त्र जप करता रहता है वह सभी विघ्नों को जीत लेता है।

गुरुदेव का एक वाक्य था कि ''आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, 'गुरु' आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा Correct (सही) जवाब देगा।'' ये बात सही साबित होती रही क्योंकि जब ध्यान नहीं लगने पर मैं धैर्य खो रहा था तो आश्रम द्वारा प्रकाशित स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका में महर्षि श्री अरविंद का एक लेख बहुत ही लाभप्रद लगा जिसमें उन्होंने लिखा था कि ''साधना में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात होती है- सच्चाई और उसके साथ-साथ इस पथ पर डटे रहने का धैर्य। क्योंकि विद्रोह, अवसाद, निराशा, क्लांति, श्रद्धा की सामयिक हानि इत्यादि बाधाएँ आती हैं। अपूर्णताएँ बाधक हो सकती हैं और कुछ समय के लिये साधक को बुरी तरह गिरा भी सकती हैं, परन्तु वह स्थायी बाधा नहीं हो सकती।''

इसी पत्रिका में दिल्ली की एक गुरुबहन का अनुभव पढ़ा जिसमें स्वयं गुरुदेव उसे ध्यान में आदेश देते हैं और वो आदेश केवल उस गुरुबहन के लिये था इसलिए उन्होंने उस आदेश के बारे में बताया नहीं। परन्तु जब गुरुदेव को कोई आदेश देना हो तो वह स्वयं ही ध्यान के दौरान आदेश देते हैं लेकिन फिर भी आजकल सोशल मीडिया पर गुरुदेव के नाम से कई भ्रामक सन्देश आते रहते हैं। जिनसे नए जुड़ने वाले साधकों में अनावश्यक ही संशय उत्पन्न होता है। गुरुदेव अपने एक वीडियो में कहते है ''मुझे तो गुरु ही गुरु मिले, चेला कोई मिला ही नहीं'' इसलिए गुरुदेव की इस बात की गंभीरता को समझ कर उनका परम् शिष्य बनने का ही प्रयत्न करना चाहिए।

साधना में मैंने अनुभव किया है कि मन कि कल्पना और ध्यान की अनुभूति दोनों अलग अलग चीजें हैं, कई बार मैं मन की कल्पना को ही अनुभूति मानकर उत्साहित या परेशान हो जाता था लेकिन गुरुदेव हर समय मार्गदर्शन करते रहते हैं। प्रत्येक साधक के मन में उठने वाले सवालों के जवाब गुरुदेव के अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर द्वारा प्रकाशित स्पिरिचुअल पत्रिका में या फिर उनके किसी न किसी वीडियो में मिल ही जाते हैं, उनके वीडियो Youtube- Gurudev Siyag's Sidh yoga - GSSY नाम से उपलब्ध हैं।

''गुरुकृपा ही केवलम,
शिष्यस्य परम् मंगलम्''

अतः मेरा आप सभी से आग्रह है कि रोग मुक्ति और आध्यात्मिक उत्थान हेतु इससे सरल और सहज आराधना और कोई नहीं है। ईश्वर प्राप्ति और साक्षात्कार का इससे सरल मार्ग और कोई नहीं हो सकता। ना कुछ छोड़ना, ना कहीं भटकना।

एक भजन की पंक्तियाँ हैं-

कोई पिछले जन्म के अच्छे करम जो बाबा तेरा प्यार मिला।
जहाँ सारी दुनिया झुकती है
मुझे वो वाला दरबार मिला।।

-देवानंद गहलोत
उम्र 26 वर्ष
नागौर (राजस्थान)

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव के पावन मिलन का वृत्तांत

मेरे आध्यात्मिक जीवन की कहानी बहुत लंबी होने की वजह से शायद आपको केवल मनगढंत लगे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

परन्तु सच यही है कि मेरी गुरुदेव से भेंट इस प्रकार अद्भुत ढंग से हुई कि यह मिलन की कहानी मेरे विश्वास का प्रमुख आधार है। केवल भेड़चाल के रूप में अध्यात्म को अपनाने वालों के अलावा हर साधक के लिए गुरुदेव से प्रथम भेंट एक महान् अद्भुत घटना है।

यह घटना 1992 की है। मैं बचपन से ही शास्त्रों के अधययन में अत्यधिक रूचि रखता था। इसलिए बचपन से ही, रामचरितमानस, महाभारत, गीता और विवेकानंद साहित्य जैसे विशाल ग्रंथों का अध्ययन कर लिया था। परन्तु विज्ञान का छात्र होने के कारण, मेरा ईश्वर में काल्पनिक विश्वास ही था।

एक बार कक्षा में विज्ञान के गुरुजी ने कहा कि जब तक किसी चीज को प्रत्यक्ष न कर लो, कभी भी आँख मूंद कर विश्वास न करना। जैसे कोई आपके सामने गाय का इस तरह वर्णन करें कि गाय के दो सींग, चार पैर होते हैं और उससे दूध निकलता है तो विज्ञान के छात्र होने के नाते यह कभी मत मानना। आपको पहले गाय को देख कर यह पता लगाना चाहिए कि यह बात सही है या नहीं। इस बात का मेरे पर गहरा प्रभाव पड़ा। मैं ईश्वरीय ज्ञान को लोगों की तरह ढकोसले के रूप में अपनाने को बिल्कुल ही तैयार नहीं था। फिर एक दिन किसी संत की मासिक धार्मिक पत्रिका में वेद वाक्य के रूप में यह पढ़ने को मिला- ऋस्वभावेन न परिवर्तेन । अर्थात स्वभाव को नहीं बदला जा सकता है। मुझे बहुत निराशा हुई कि जब ईश्वर के कारण, मेरा स्वभाव और मुझमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं आ सकता तो

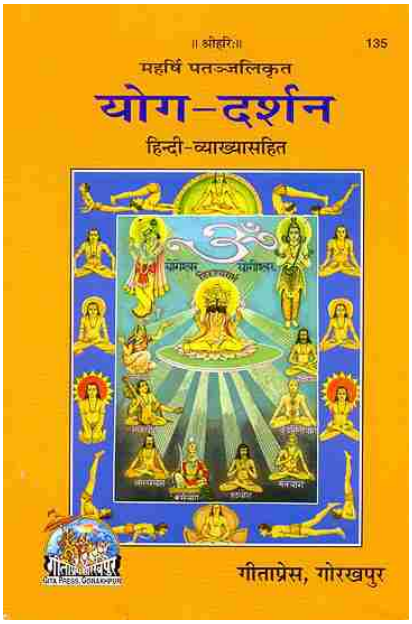

ऐसे ईश्वर को प्रत्यक्ष करने का क्या लाभ? उसके बाद मैंने अपना सारा ध्यान पढ़ाई में लगा दिया।

घर के हालात दयनीय थे। पिताजी का देहान्त हो चुका था। भगवान् की कृपा से, पढ़ाई की समाप्ति के बाद ही सरकारी नौकरी मिल गयी। घर वालों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। मैं बचपन से ही दुःख दारिद्रय के उपरांत भी प्रसन्न चित्त रहता था। तनाव क्या होता है? बिलकुल ही अनजान था। परन्तु नौकरी के तुरंत बाद ही मैं तनाव से घिर गया। हमेशा प्रसन्न चित्त रहने वाला, अब बहुत उदास चित्त हो चुका था। घर वाले भी मेरे स्वभाव में आये आकस्मिक बदलाव के कारण बहुत चिन्तित हुए। तनाव के कारण मेरी ऐसी मनःस्थति हुई कि घर से बाहर जाने और किसी से मिलने की कल्पना मात्र से ही डर लगने लगा।

वैसे जिन्दगी के हर मोड़ पर तनाव से इन्सान का सामना होता है परन्तु मैं गहरे तनाव में था। यह तनाव नित्य बढ़ता ही जा रहा था। जो मेरे लिए बड़ा ही असहनीय था। परन्तु इसका कोई ईलाज भी न था। ऐलोपैथी उपचार ही एक मात्र ईलाज था। जो ठीक करने की बजाय रोग को बढ़ाने का कार्य कर रहा था। मैं पुनः शास्त्रों की ओर बढ़ा, जब तक पढ़ता रहता, मन थोड़ा शांत रहता। परन्तु पढ़ना बंद करते ही तनाव वैसा का वैसा। मैं जीवन से पूरी तरह टूट चुका था। घर वालों की चिंता स्वाभाविक थी कि नौकरी छोड़कर घर बैठ गया है। मुझ पर घर वालों का दबाव बढ़ता ही जा रहा था।

एक दिन बुझे मन से घर से निकला। उस दिन मंगलवार का दिन था। मैं घर से निश्चय कर अपने ड्यूटी स्थल सुजानगढ (चूरू) के लिए निकला था। इसके लिए जोधपुर से रात्रि के लगभग नौ बजे एक लोकल ट्रेन चुरू तक जाती थीं। परन्तु मैं घर से सुबह ही निकल कर जोधपुर, रेलवे

www.the-comforter.org

स्टेशन पर पहुँच गया था। मन में विचार आया कि बाजार जाकर कोई धार्मिक पुस्तक खरीद कर लाऊँ, जिसे पढ़कर मन को थोड़ी शांति मिलेगी। यह सोचकर बाजार के लिए निकला ही था कि थोड़ी दूर जाने पर एक धार्मिक पुस्तकों से भरा ठेला आता मिला।

मैंने पातंजलि योगदर्शन की छोटी सी पुस्तक खरीद ली। खरीदना तो मैं कोई बहुत बड़ी साइज का ग्रंथ चाहता था, परन्तु न चाहते यह योग दर्शन की पुस्तक खरीद ली जिससे मैं बिलकुल ही अपरिचित था। मैं आकर पढ़ने लगा तो इस पुस्तक का एक शब्द भी मेरे पल्ले नहीं पड़ा। परन्तु यह पुस्तक मैं अपने थैले में डाल नहीं सका। ट्रेन आ चुकी थी। मैं डिब्बे में चढ़ा। डिब्बे में खचाखच भीड़ थी। मुझे सीट नहीं मिली। मैं गैलेरी में बैठ गया। तभी एक महाशय की नजर मुझ पर पड़ी। पता नहीं उस महाशय के हृदय में कैसे दया उमड़ी। उस भीड़ में सरककर मुझे अपने पास थोड़ी जगह दी। मैं चुपचाप उनके पास वह पुस्तक हाथ में लिए बैठा रहा। थोड़ी देर बाद वे मेरे हाथ से पुस्तक लेते हुए बोले कि इस युवावस्था में यह योग की पुस्तक क्यों पढ़ रहे हो? यह अवस्था तो इंडिया टुडे और फिल्मी सितारों और माया पुरी पढ़ने के लिए है। क्या तुम योगाभ्यास करते हो? मैं बोला कि मैं योग शब्द से भी अनभिज्ञ हूँ। केवल धार्मिक पुस्तक समझ कर खरीद लिया है। परन्तु समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है! क्या योग के विषय जानना चाहते हो? यह पढ़ने की चीज नहीं है। यह पूरी तरह विज्ञान की भांति प्रेक्टिकल (प्रायोगिक) विषय है।

उन्होंने गुरुदेव का नाम लेकर इस योग दर्शन के विषय में विस्तार पूर्वक समझाया। सुनकर मन को इतनी शीतलता प्राप्त हुई कि शब्दों द्वारा वर्णन संभव नहीं है। मेरी तीव्र जिज्ञासा देख कर बोले कि इस गुरुवार तक

गुरुदेव गीता भवन जोधपुर में ठहरे हुए हैं। फिर वे बीकानेर अपने निवास स्थान पर चले जाएंगे। वे जोधपुर पहली बार ही आये हैं। वे बीकानेर में ही गुरुवार को दीक्षा देते हैं। उनसे मैंने बीकानेर का पता पूछा तो वे बोले कि पूर्ण पता तो मुझे मालूम नहीं है। परन्तु बीकानेर की प्रताप बस्ती में एक सत्संग भवन है। वहाँ पर कभी कभी आते हैं।

मेरी जिज्ञासा इतनी बढ़ गई थी कि मैं अगले गुरुवार की प्रतीक्षा कर ही नहीं सकता था। मैंने निश्चय कर लिया, और अगले स्टेशन पर उतर गया। अगले दिन बुधवार को वापस जोधपुर आकर रेलवे स्टेशन पर ही होटल में ठहर गया। सुबह का बेसब्री से इंतजार करने लगा। उस समय दीक्षा कार्यक्रम सुबह सात बजे था। मैं सुबह बहुत जल्दी तैयार होकर पाँच बजे के लगभग स्टेशन से पैदल ही रवाना होकर, गीता भवन सिंवाची गेट के लिए चल पड़ा।

जालोरी गेट चौराहे के पास, मेरे दिमाग में प्रश्न पैदा हुआ कि तू कहाँ जा रहा है? क्या कहीं फँसने तो नहीं जा रहा है! कहीं गलत दिशा में तो नहीं जा रहा हूँ? मेरे पैर अचानक से रुक गये? चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। बहुत जोर से आकाशवाणी सुनाई दी कि तू वासुदेव श्री कृष्ण के पास जा रहा है। वही तुम्हारे गुरु हैं। यह आकाश वाणी शब्द मैंने शास्त्रों में पढ़ा था। सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि मेरे पास कोई था ही नहीं। यह आवाज कहाँ से आई। मेरे कदम पहले से कहीं अधिक तेजी से बढ़ने लगे। वहाँ पहुँचा तो एक छोटे-से कमरे में तीन लोगों के साथ गुरुदेव कुर्सी पर विराजमान थे और उन लोगों से राष्ट्रीयता के विषय में, कुछ बातें कर रहे थे। मैं चुपचाप मन ही मन प्रणाम करके गुरुदेव के चरणों में एक अबोध बालक की भांति बैठ गया। और अंतरात्मा में ऐसी धीमी से अनुभूति लगातार हो रही थी, यह केवल आध्यात्मिक गुरु ही नहीं, अब तक के सबसे बड़े ईश्वर के अवतार हैं। जो पहले कभी इस धरा पर नहीं आए और न कभी आएंगे।

www.the-comforter.org

उस दिन 7-8 लोग ही दीक्षा के लिए आये थे। उसमें एक पागल महिला भी आयीं थीं। उसके पति ने उसे छोड़ दिया था। वह पढ़ी लिखी थी। बाद में पूर्ण रूप से पागलपन से मुक्त हो गई थी। और उसे साल भर बाद शिक्षक की सरकारी नौकरी मिल गयी थी। बाद में पता चला कि उसके पति ने अपना लिया और पति के साथ आगरा अपने ससुराल चली गयी।

उस दिन उस पागल औरत का अद्भुत नृत्य के साथ ध्यान लगा कि ऐसे ध्यान की मुद्रा में नृत्य कभी देखाने को नहीं मिला। मेरा भी इतना गहरा ध्यान लगा और मस्तिष्क में अजीब नाम का नशा चढ़ा कि ऐसा दिव्य नशा जो महीनों तक ऐसा चढ़ा रहा। देखकर लोगों को भ्रम हो जाता था कि जरूर इसने भांग पी रखी है।

वास्तव में, मेरे हाथ में पातंजलि योग दर्शन की छोटी सी पुस्तक नहीं होती तो शायद कितना विलंब होता गुरुदेव का पावन सानिध्य पाने में या मैं निराशा के गहन अंधकार में सदा के लिए भटक भी सकता था। जीवन में ऐसे अद्भुत क्षण दुर्लभ होते हैं। परन्तु प्रभु की पूर्व निश्चित व्यवस्था के अनुसार समय पर ही ऐसे अद्भुत क्षणों का आविर्भाव हर जिज्ञासु मानव के जीवन में आ पाता है। यही परम सत्य है। मेरे हृदय में यह परम सत्य ऐसा उदघाटित हुआ कि अब रोके नहीं रुक रहा था। मैं यह सोचने लगा कि संसार ने पहले कभी ऐसा परम सत्य नहीं सुना है। इस कारण इस बात को सुनकर सभी तैयार हो जाएंगे। सबसे

पहले मेरे परिवार और मेरे घनिष्ठ मित्रों की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। इस कारण मैं अपनी ड्यूटी स्थल सुजानगढ (चुरू) जाने की बजाय, घर वालों को खबर देने के लिए वापस घर पर चला गया। रात्रि का समय था। यह सोचकर कि सुबह बताऊँगा। परन्तु मेरी माँ को चिन्ता हुई कि यह इतना जल्दी कैसे घर आ गया है? यह अवश्य ही नौकरी करना नहीं चाहता है। तब मैंने माँ को समझाया कि मुझे सदगुरु की प्राप्ति हुई है। मैं धन्य हो गया हूँ। लाख समझाने के बाद भी माँ को विश्वास नहीं हुआ, बोली इस कलियुग में कहा सदगुरु हैं? संसार तो ढोंगी संन्यासियों से भरा पड़ा है।

मेरी माँ शांत होने की बजाय ज्यादा आग बबुला हो, निरंतर बड़बड़ा रहीं थीं। मैं दर्शन की जानकारी देकर, उन्हे समझाने में असमर्थ था। उनकी चिंता भी जाहिर सी थी। उन्हे यह डर था कि इसको किसी ने वशीकरण मंत्र द्वारा पागल कर दिया है, यह अवश्य ही संन्यासी हो जायेगा। मैं माताजी को हाथ जोड़कर सोने चला गया।

मैं सुबह लगभग साढ़े चार बजे, तैयार होकर गुरुदेव की तस्वीर सामने रख कर निर्धारित पन्द्रह मिनट के लिए ध्यान में बैठा। निर्धारित समय पूरा होते ही हाथ में जोरदार करंट का झटका महसूस हुआ। घर में विद्युत की सुविधा नहीं थी। मेरे मन में यह विचार आया कि अवश्य ही अंधेरे में बिच्छू ने काट लिया है। क्रमश अगले अंक में ...

-त्रिलोकचन्द द्विवेदी
बालेसर, जिला-जोधपुर

❖❖❖

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग की अद्भुत महिमा

संतान सुख की प्राप्ति

परमपूज्य समर्थ सदगुरुदेव भगवान् श्री रामलाल जी सियाग एवं बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम .....

मैं प्रदीप कुमार ठारवानी रायपुर छत्तीसगढ़ से,-मुझ पर मेरे समर्थ सद्गुरु की विशेष कृपा हुई है !

विशेष कृपा कहने का क्या मतलब हुआ ?

वो कहते हैं ना कि गुरु अपने शिष्यों को कसौटी पर कसते हैं, कुछ इस प्रकार की विषम परिस्थितियां पैदा कर देते हैं, जिससे शिष्य की श्रद्धा और विश्वास को परखा जा सके ! तो मेरे जीवन में भी ऐसी कई विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं- जैसे कि सबसे पहले तो मेरा विवाह काफी विलंब से हुआ लगभग 36 साल की उम्र में, विवाह उपरांत मैंने अपनी पत्नी (राशि ठारवानी) को गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी दी, पर वह यदा-कदा ही ध्यान करती थी ! अब बारी थी संतान सुख की तो शुरुआती 3 से 4 बार गर्भ ठहरता ही नहीं था, गर्भपात हो जाता था ! अंततः गर्भधारण हुआ और 9 महीने बाद सुंदर सी बेटी का जन्म तो हुआ, किंतु उसमें प्राण ही नहीं थे।

इस घटना के बाद मैंने क्या-क्या नहीं सुना, आप सभी समझ सकते हैं ! पत्नी तब कहती थी की आप तो कहते थे कि गुरु जी हैं किसी बात की चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा, फिर ऐसा हमारे साथ ही क्यों हुआ ? क्यों इतनी बड़ी घटना घट गई ? मैं क्या कहता अपनी पत्नी को..... क्योंकि मैं तो पहले से ही शून्य की अवस्था में था ! (मन में ये विचार आ रहा था गुरुजी परीक्षा ले रहे हैं.... .क्यों)

समय अपनी गति से चलता रहा और फिर वह दिन आ गया, 2019 के शुरू में जब पत्नी का गर्भधारण हुआ ! दूसरे महीने से ही रायपुर के एम्स में पत्नी की नियमित जाँच होने लगी (चूंकि पहले की History ठीक नहीं थी इसलिए सब अत्यधिक सावधान थे) पाँचवे महीने में एम्स के डॉक्टरों ने बताया कि यहाँ की मशीन ठीक से काम नहीं कर रही है (जो कि मेरे लिये एक आश्चर्यजनक बात थी) अतः आप सोनोग्राफी बाहर से करवा लें। इसके बाद हमने रायपुर के साई, डायग्नोस्टिक में सोनोग्राफी करवाई।

जिस डॉक्टर ने सोनोग्राफी की थी उन्होंने हम दोनों पति पत्नी को सामने बैठा कर प्रेम पूर्वक समझाया, कि होने वाले बच्चे में कुछ बड़ी खराबी है, माँ और बच्चे को जोड़कर के रखने वाली जो नाल होती है, जिससे माँ का पोषण बच्चे में जाता है, उस नाल में बहुत बड़ी गाँठ है, जिसकी वजह से माँ का पोषण बच्चे को पूरी तरह से नहीं मिल पाएगा, जिसकी वजह से आपका बच्चा मानसिक विकलांग या शारीरिक विकलांग हो सकता है। अतः मैं आपको यह सलाह दूँगा कि आप गर्भपात करवा लें !

डॉक्टर की बात सुनकर हम दोनों पति पत्नी पर क्या बीत रही होगी, यह आप अच्छी तरह समझ रहे होंगे !

बहुत ही उदास मन से घर पर कदम रखते ही परिवार के सभी सदस्यों (ग्यारह सदस्यीय संयुक्त परिवार है मेरा) को देख मेरी पत्नी की आँखों से वेदना की वर्षा होने लगी और मैं दूसरे कमरे में जाकर सिसकियाँ लेता हुआ गुरुदेव की तस्वीर को प्रश्नवाचक दृष्टि से एकटक निहारता रहा.. .. निहारता रहा...

मेरे पास कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं, क्योंकि गुरुदेव सियाग की कृपा मिलने से पहले मैं भारतवर्ष के लगभग सभी आध्यात्मिक संस्थानों की खाक छान चुका था। वह इसलिए कि मुझे कुंडलिनी जागरण के महान् गुरु की खोज थी, पर जैसे ही मुझे गुरुदेव सियाग सिद्ध योग दर्शन की जानकारी प्राप्त हुई, मेरी खोज वही खत्म हो गई। क्योंकि जिस व्यक्ति के केवल तस्वीर व उनकी आवाज में संजीवनी मंत्र सुन लेने मात्र से कुंडलिनी

www.the-comforter.org

जागरण हो, वह व्यक्ति सामान्य गुरु नहीं हो सकता। यह लक्षण तो केवल सहस्र कोटि ब्रह्मांड की रचना करने वाले ईश्वर का ही काम हो सकता है ! घर के गमगीन माहौल के लगभग तीन घंटों के बाद मैंने पत्नी को स्पष्ट कहा कि अब जो भी कुछ कर सकते हैं वह गुरुदेव सियाग ही कर सकते हैं, समर्पण कर दो अपने आपको इनके श्री चरणों में।

फिर क्या था, पत्नी ने करुण पुकार की और उसी क्षण से गुरुदेव ने अपनी शरण में ले लिया और ध्यान के दौरान कई तरह की यौगिक क्रियाएँ हुआ करती थी और काफी देर तक होती थी ! आप विश्वास नहीं करेंगे, मेरी पत्नी चौबीसों घंटे गुरु जी कि निगरानी में रहती थी, ध्यान के अलावा भी जब वह खाना बनाती, कपड़े धोती या और भी कोई कुछ काम करती हो गुरुजी उससे निरंतर बात करते थे, और वह भी सिंधी भाषा में !

ध्यान के दौरान गुरु जी ने सारी स्थिति को स्पष्ट कर दिया कि गर्भ में पल रहा बच्चा लड़का है, और इसका नाम तुम सिद्धार्थ रखना और किसी प्रकार की चिंता मत करना मैं हूं ना....

हम दोनों पति पत्नी पूरी श्रद्धा, विश्वास और प्रेम से ध्यान और नाम जप करते रहे ! दिन, हफ्ते, महीने बीतने के साथ-साथ नियमित रूप से रूटीन चेकअप होता रहा और जब- जब हम एम्स जाते, तब-तब हम पर दबाव बढ़ जाता, क्योंकि सोनोग्राफी में रिपोर्ट हर बार नेगेटिव ही आती, डॉक्टर यह बार-बार बताते कि बच्चे में खराबी है आप क्यों रिस्क ले रहे है !

डॉक्टर, परिवार, रिश्तेदार इन सभी का दबाव हम दोनों पति-पत्नी पर अंतिम समय तक बना रहा कि हम क्यों आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को चुनौती दे रहे हैं !

अंततः वह दिन आ ही गया 13 अक्टूबर 2019 दिन रविवार शरद पूर्णिमा के शुभ दिन में रात्रि 9:15 बजे गुरु कृपा से जन्मे सिद्ध योगी मेरे पुत्र सिद्धार्थ का जन्म हुआ !

आज इन अनुभवों को लिखते समय सिद्धार्थ लगभग 6 महीने का हो चुका है, और इन 6 महीनों में मैंने कभी उसे बगैर योग मुद्रा के सोते हुए नहीं देखा शांभवी मुद्रा लगा कर के ही सोता है ! 24 घंटे उसका सर गर्म रहता है और वह जब सोकर उठता है, उसके सर वाले हिस्से का बिस्तर पसीने से इतना गिला हो चुका होता है कि उसे निचोड़ा जा सकता है !

यह थी मेरे सतगुरु की महिमा, छोटी-मोटी तकलीफों से क्या घबराना जब स्वयं ईश्वर गुरु रूप में आपको प्राप्त हुए हैं !

गुरुदेव द्वारा स्थापित संस्था अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की वेबसाइट (www.the-comforter.org) में सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी उपलब्ध है।

और हां आपको एक विशेष बात बता दूं, कि यह जो लोकडाउन चल रहा है, पूरी दुनिया में यह गुरु जी की विशेष व्यवस्था है जिससे आप ध्यान और नाम जप के माध्यम से अपने अंदर उतर सको। गुरु, ईश्वर से एकाकार हो सको। आप सभी से निवेदन है, कि मंत्र जाप जितना ज्यादा हो सके उतना करें !

ऐसे परम दयालु सद्गुरुदेव भगवान् के पावन चरण कमलों में बारंबार प्रणाम करता हूँ।

-प्रदीप ठारवानी
रायपुर, छत्तीसगढ़

❖❖❖

www.the-comforter.org

सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा

"21 वी सदी में सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा। मेरी यह बात विश्व के लोगों को आश्चर्यचकित कर सकती है परन्तु संपूर्ण विश्व के भविष्यदृष्टाओं ने स्पष्ट शब्दों में, एक ही स्वर में इस क्रांतिकारी परिवर्तन की भविष्यवाणी कर रखी है। यह कार्य मात्र वैदिक दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सनातन दर्शन को आधार मानकर ही संभव है।"

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

शक्तिपात-दीक्षा

हमारे दर्शन का उच्चत्तम दिव्य-विज्ञान है

"गुरु-शिष्य परम्परा में शक्ति पात दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शक्तिपात-दीक्षा हमारे दर्शन का उच्चत्तम दिव्य-विज्ञान है।

यह गुरुओं द्वारा दी जाने वाली गुप्तदीक्षा है, जो आदि काल से गुरु-शिष्य परम्परा में चली आ रही है। गुरु, शक्तिपात द्वारा साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं, हमारे शास्त्रों में इसे जगत् जननी कहा है। जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिंण्ड में है। यह दिव्य ज्ञान मात्र हमारे ऋषियों की ही देन है।"

देहस्थाः सर्व्व विद्याश्च देहस्थाःसर्व्व देवताः।
देहस्थाः सर्व्व तीर्थानि गुरु वाक्येन लभ्यते।।
ब्रह्माण्ड लक्षणं सर्व्व देह मध्ये व्यवस्थितम्।।

"ज्ञान संकलिनी तन्त्र"

सागर महि बूँद, बूँद महि सागर, कवणु बुझै विधि जाणै।।
श्री नानक देव जी

बूंद समानी समुंद में, यह जानै सब कोय।
समुंद समाना बूंद में, बूझै विरला कोय।।कबीर।।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

भौतिक विज्ञान और सनातन धर्म

''यह योग वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है, हे सत्पुरुषो ! इसका सेवन करो।''

मनुष्य शरीर-रूपी यंत्र को समझने और उसमें होने वाली विकृतियों को ठीक करने के लिए, भौतिक विज्ञान हर संभव प्रयास कर रहा है परन्तु विज्ञान, इस यंत्र को समझने में अभी तक पूर्ण सफल नहीं हो सका है। यही कारण है , मानव जाति अंसख्य असाध्य रोगों से भयंकर कष्ट सहन कर रही है। ऐसे अनेक प्राणघातक रोग हैं, जिनका निदान भौतिक विज्ञान बिलकुल नहीं कर पा रहा है। 'एड्स' जैसे खतरनाक रोग से आज सम्पूर्ण विश्व कम्पायमान है।

www.the-comforter.org

भौतिक विज्ञान इस विकसित स्थिति में भी संतुष्ट नहीं है। अब भौतिक विज्ञान के शोधकर्ताओं का यह विश्वास पक्का हो गया है कि इसके अतिरिक्त और भी पथ है, जिस पर चलकर मनुष्य पूर्ण शान्ति प्राप्त कर सकता है। अतः पश्चिमी देशों के बुद्धिजीवियों का झुकाव तेजी से भारतीय संस्कृति की तरफ हो रहा है।

भारतीय योगदर्शन, विश्व में एक मात्र दर्शन है, जो मनुष्य के पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि बताता है। पूर्णता प्राप्त करने के बाद मनुष्य सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हो जाता है। मनुष्य के त्रिविध ताप शांत हो जाते हैं। इस संबंध में महायोगी गोरखनाथ जी ने कहा है-

''यह योग वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है'', जिससे साधक के त्रिविध ताप- आदि दैहिक, आदि भौतिक, आदि दैविक(Physical, Mental & Spiritual Afflictions)शांत होते हैं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाइबल

विश्व की यह स्थिति स्पष्ट करती है कि अब विश्व में शांति केवल धार्मिक क्रान्ति से ही संभव है।

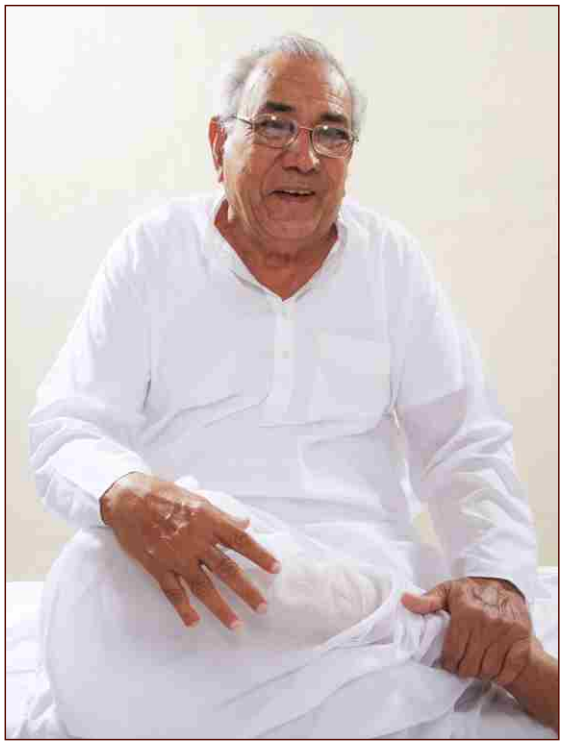

बाइबल एक भविष्यवाणियों का ग्रन्थ है। इसमें सृष्टि उत्पत्ति से लेकर मनुष्य के पूर्ण विकास तक की भविष्यवाणियाँ है। बाइबल की सभी भविष्यवाणियाँ बहुत ही आश्चर्य पूर्ण ढंग से भौतिक जगत् में पूर्ण सत्य प्रमाणित हो रही हैं। परन्तु बाइबल अनुग्रह के युग के संबंध में कुछ नहीं जानती।

जिस सहायक को बुलाने की भविष्यवाणी यहोवा ने पुराने नियम में कही है, उसे ही यीशु तथा बाइबल के विभिन्न संतों ने दोहराया है। अनुग्रह के युग में सम्पूर्ण मानव जाति का उद्धार होगा, जिसका वर्णन बाइबल में प्रेरितों के कार्य 2:16 से 19, 1 कुरन्थियों 12:13, गलतियों 3:28 तथा कुलुसियों 3:11 में स्पष्ट शब्दों में किया गया है। इस संबंध में बाइबल कहती है कि इतना बड़ा उद्धार पहले किसी युग में उपलब्ध नहीं था, और न ही इसके बाद कभी उपलब्ध होगा।

बाइबल की भविष्यवाणियों के अनुसार यीशु के पुनरागमन तक का युग व्यवस्था का युग था। जिस तीसरी शक्ति के प्रकट होने की भविष्यवाणी बाइबल करती है, जब वह प्रकट होकर पवित्रात्मा से बपतिस्मा(दीक्षा) देने लगेगा, जिसका वर्णन प्रेरितों के कार्य 1:4 व 5 में किया है, तब व्यवस्था का युग समाप्त होकर, अनुग्रह का युग प्रारम्भ हो जावेगा।

www.the-comforter.org

इस अनुग्रह के कारण सम्पूर्ण मानव-जाति का जो उद्धार होगा, उसे बाइबल के संत और भविष्यवक्ता बिलकुल नहीं समझ सके। इब्रानियों 11:13 , ल्युक 10:21 से 23 तक के अनुसार इस बड़े उद्धार को संतों और भविष्यवक्ताओं ने देखना समझना चाहा, परन्तु वे इसे न देख सके और न ही समझ सके। उन्होंने दूर से देखकर इस बड़े उद्धार के बारे में भविष्यवाणी की थी। उन पर इस उद्धार का भेद प्रकट नहीं किया गया था। इफिसिया 3:1से 16, 1 पीटर 1:10 से 12 । बाइबल के अनुसार स्वर्ग के देवता भी उस बड़े उद्धार के बारे में कुछ भी नहीं समझ सके। इसलिए वे भी इसे देखने की लालसा रखते हैं।

यही कारण है कि ईसाई जगत् के पंडित बाइबल के विभिन्न अंशों को एक साथ मिलाकर अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार अर्थ निकाल रहे हैं। परन्तु मनुष्य लाखों बौद्धिक प्रयास से भी सत्य को प्रकट होने से नहीं रोक सकेगा।

आज संसार में लगभग विश्वास का अभाव हो चला है। ऐसी स्थिति विश्व की पहले कभी नहीं हुई। आज सम्पूर्ण विश्व में तामसिक वृत्तियों का साम्राज्य है। विश्व की यह स्थिति स्पष्ट करती है कि अब विश्व में शांति केवल धार्मिक क्रान्ति से ही संभव है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
7.10.1997, बीकानेर

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में साधक

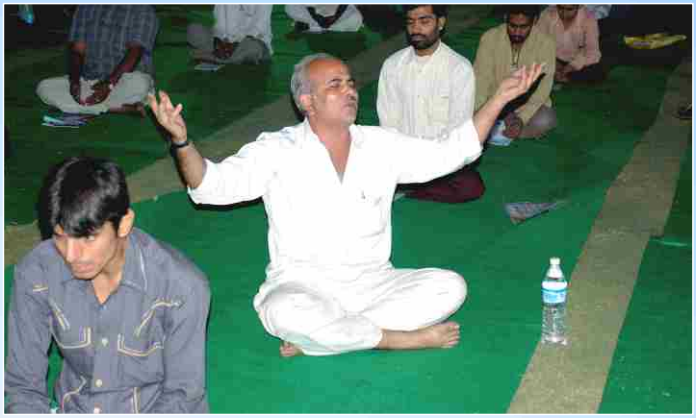

the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सनातन धर्म का शुभ संदेश

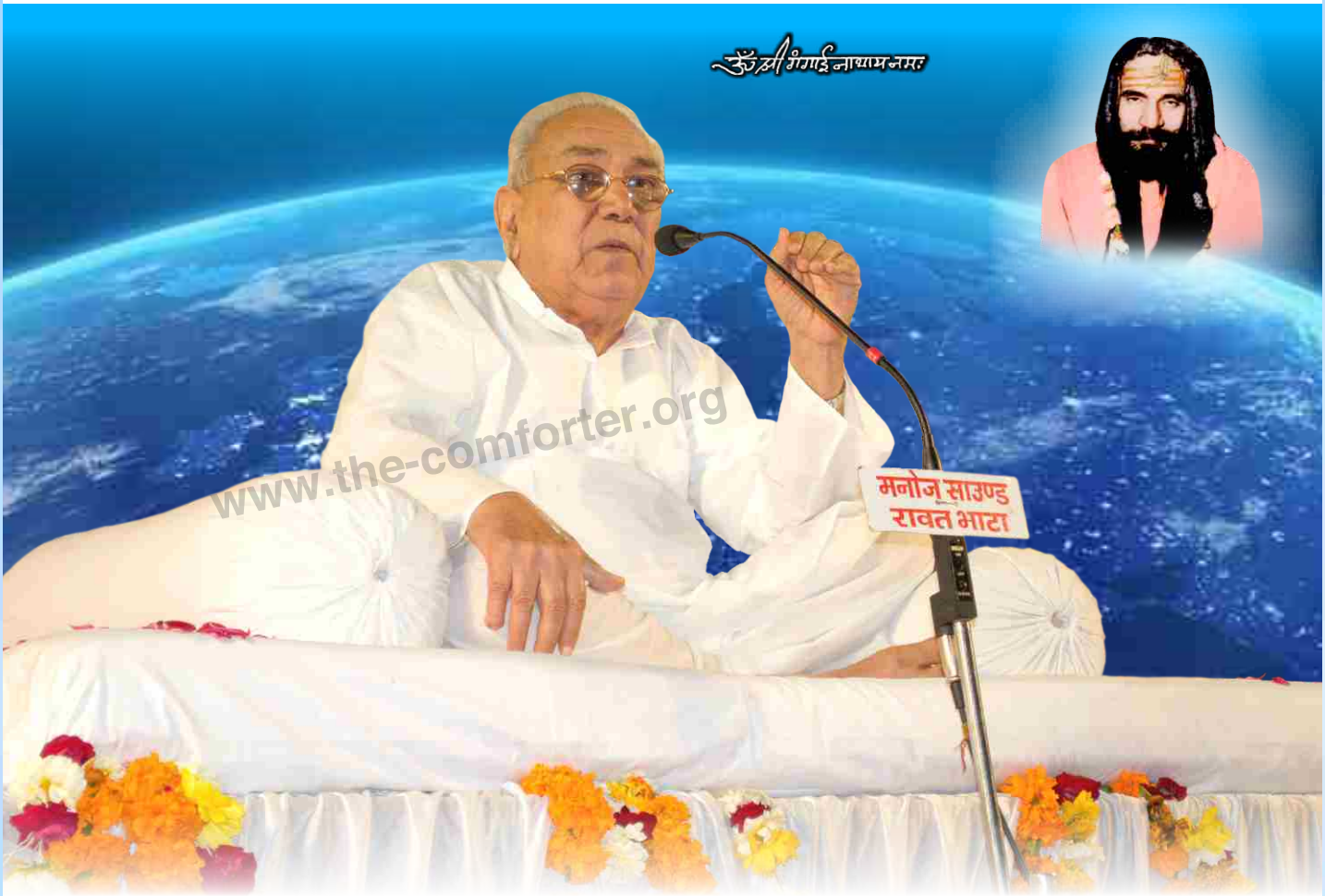

www.the-comforter.org

''मैं, मेरे सद्गुरुदेव के आदेशानुसार सनातन धर्म का संदेश सम्पूर्ण विश्व के सकारात्मक लोगों तक पहुँचाने निकला हूँ। मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बाँटने संसार में निकला हूँ। योगदर्शन, और दर्शनों की तरह किसी प्रकार का खण्डन-मण्डन नहीं करता। यह तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है। यह तो मानव मात्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बतलाकर मोक्ष प्रदान करता है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।